॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

Rohan Desai
21/12/2010 03:03 AM
Delhi

निर्मित

WWW.PANDIT.COM
WWW.MAHAGURU.COM
WWW.OCCULTMASTER.COM

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	21/12/2010
जन्म समय	03:03
जन्म स्थान	Delhi
अक्षांश	28 N 39
देशांतर	77 E 13
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	24:00:37
सूर्योदय	7:9:23
सूर्यास्त	17:28:35

घात चक्र

महीना	माघ
तिथि	4,9,14
दिन	गुरुवार
नक्षत्र	शतभिसा
योग	शुक्ल
करण	तैतिल
प्रहर	4
चंद्र	12

पंचांग विवरण

तिथि	पूर्णिमा
योग	शुभ
नक्षत्र	मृगशिरा
करण	बावा

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पद
योनि	सर्प
गण	देव
नाड़ी	मध्य
जन्म राशि	वृष
राशि स्वामी	शुक्र
नक्षत्र	मृगशिरा
नक्षत्र स्वामी	मंगल
चरण	2
युञ्जा	पूर्वा
तत्त्व	पृथ्वी
नामाक्षर	वी
पाया	लोहा
लग्न	तुला
लग्न स्वामी	शुक्र

www.pandit.com

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	धनु	04:52:42	गुरु	मूल	केतु	तिसरा
चन्द्र	--	वृष	29:15:23	शुक्र	मृगशिरा	मंगल	आठवाँ
मंगल	--	धनु	15:48:30	गुरु	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	तिसरा
बुध	हाँ	धनु	02:51:49	गुरु	मूल	केतु	तिसरा
गुरु	--	मीन	01:12:39	गुरु	पूर्व भाद्रपद	गुरु	छठा
शुक्र	--	तुला	19:31:12	शुक्र	स्वाति	राहु	पहला
शनि	--	कन्या	22:03:16	बुध	हस्त	चन्द्र	बारहवां
राहु	हाँ	धनु	08:52:49	गुरु	मूल	केतु	तिसरा
केतु	हाँ	मिथुन	08:52:49	बुध	आर्द्रा	राहु	नौवां
लग्न	--	तुला	10:47:14	शुक्र	स्वाति	राहु	पहला

सूर्य
धनु
मूल
हानिप्रद

चन्द्र
वृष
मृगशिरा
हानिप्रद

मंगल
धनु
पूर्व षाढ़ा
हानिप्रद

बुध
धनु
मूल
लाभप्रद

गुरु
मीन
पूर्व भाद्रपद
हानिप्रद

शुक्र
तुला
स्वाति
लाभप्रद

शनि
कन्या
हस्त
योगकारक

राहु
धनु
मूल
--

केतु
मिथुन
आर्द्रा
--

www.pandit.com

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

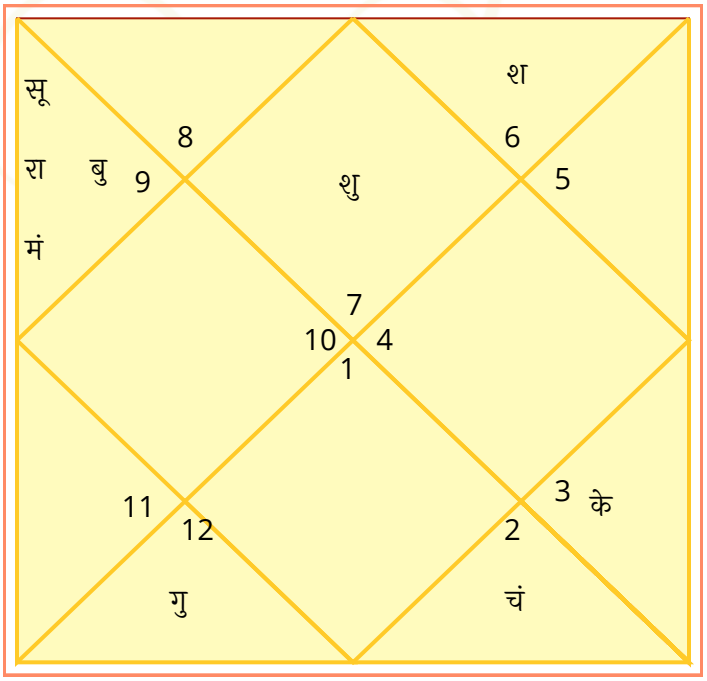

व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

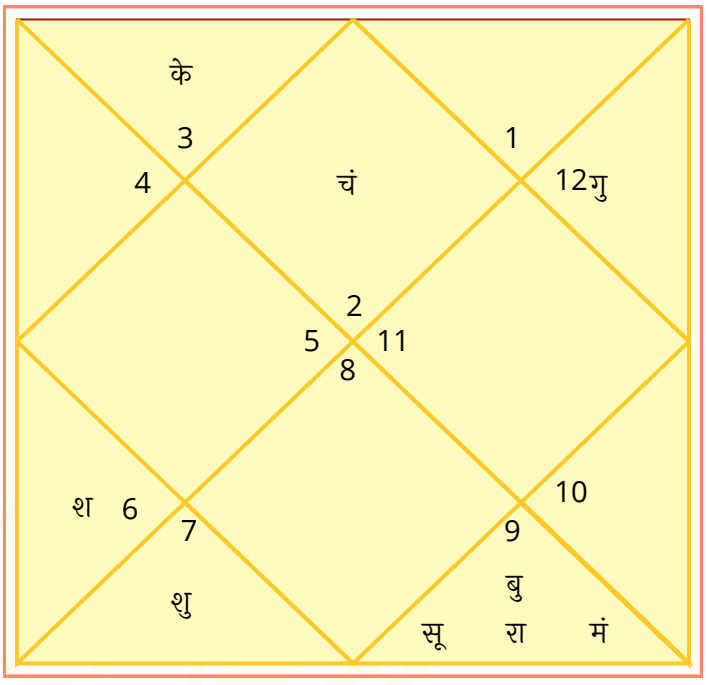

चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

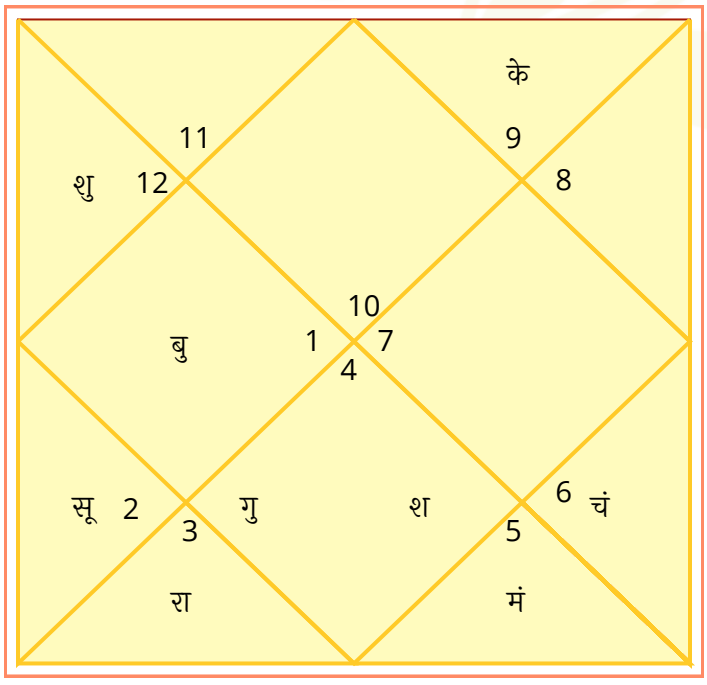

नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

www.pandit.com

भाव सन्धि

लग्न - 10:47:14 दशम भाव मध्य - 13:25:25

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	तुला	10:47:14	तुला	26:13:36
2	वृश्चिक	11:39:58	वृश्चिक	27:06:19
3	धनु	12:32:41	धनु	27:59:03
4	मकर	13:25:25	मकर	27:59:03
5	कुम्भ	12:32:41	कुम्भ	27:06:19
6	मीन	11:39:58	मीन	26:13:36
7	मेष	10:47:14	मेष	26:13:36
8	वृष	11:39:58	वृष	27:06:19
9	मिथुन	12:32:41	मिथुन	27:59:03
10	कर्क	13:25:25	कर्क	27:59:03
11	सिंह	12:32:41	सिंह	27:06:19
12	कन्या	11:39:58	कन्या	26:13:36

चलित कुंडली

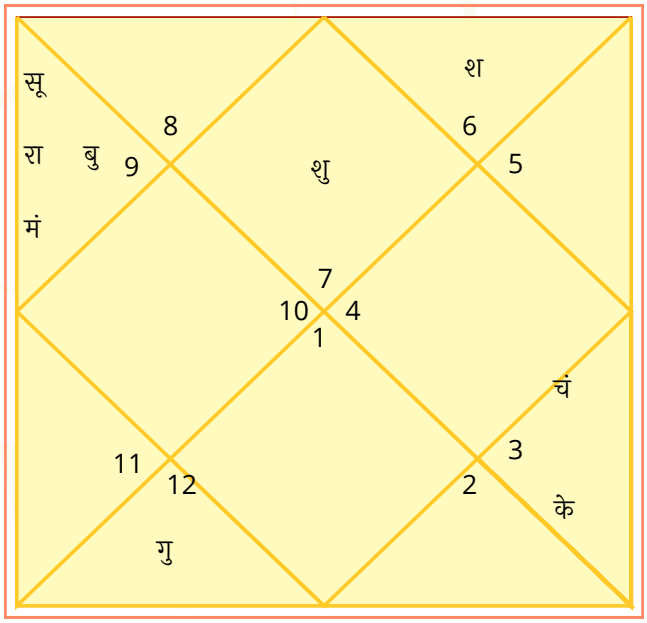

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

www.pandit.com

वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली

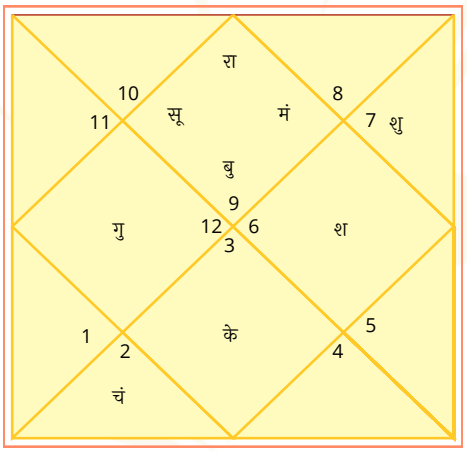

शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली

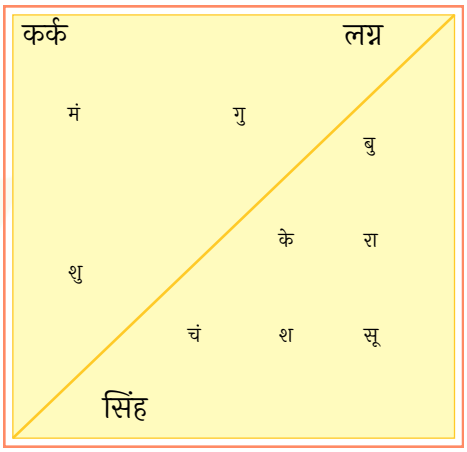

वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली

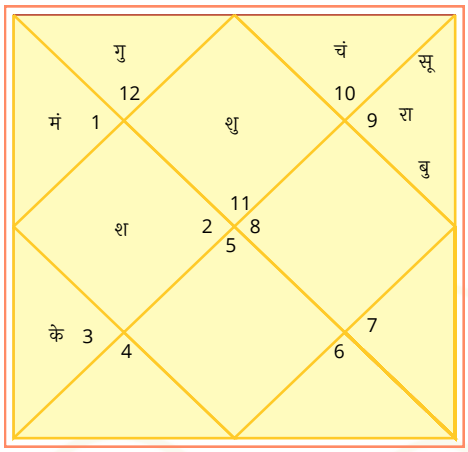

भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली

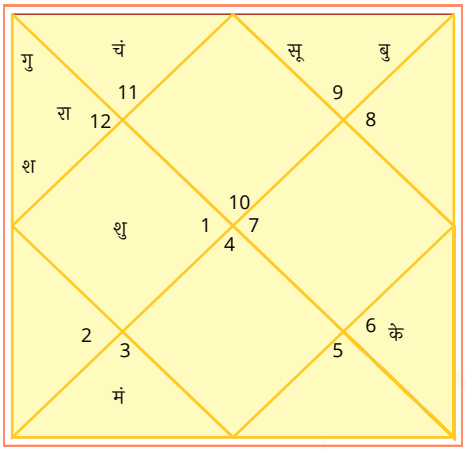

भाग्य

पंचमांश कुंडली

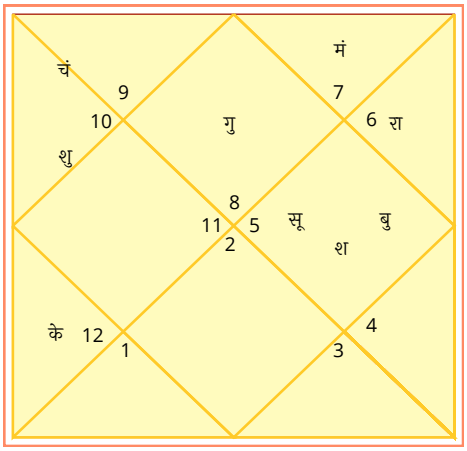

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली

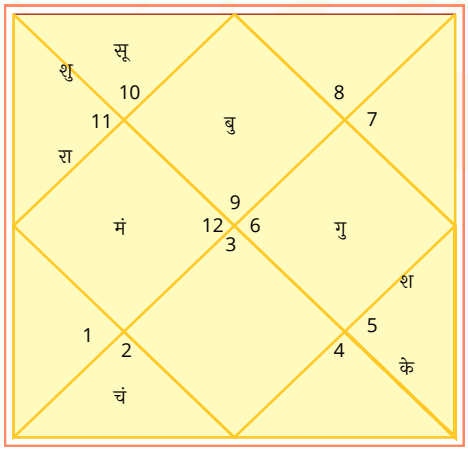

सन्तान

अष्टमांश कुंडली

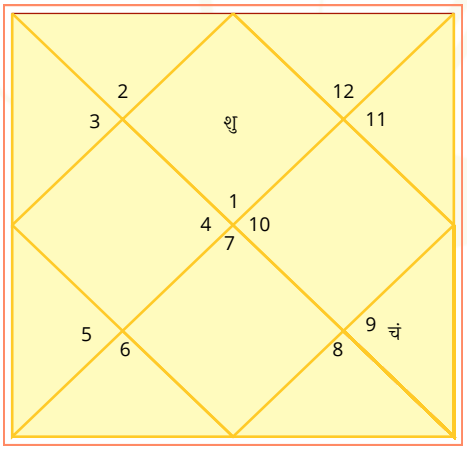

आयु

दशमांश कुंडली

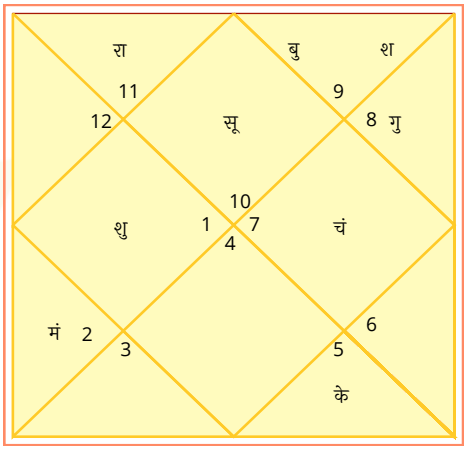

व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली

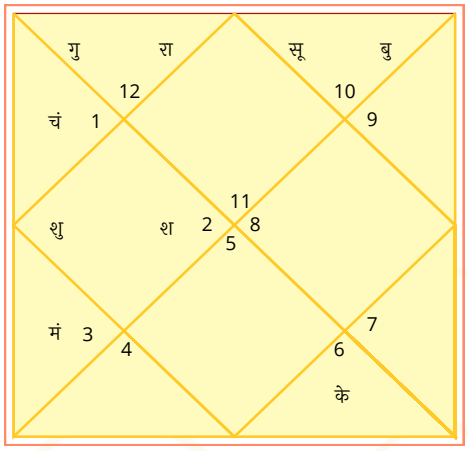

माता-पिता, पैतृक सुख

www.pandit.com

वर्ग कुंडली

षोडशांश कुंडली

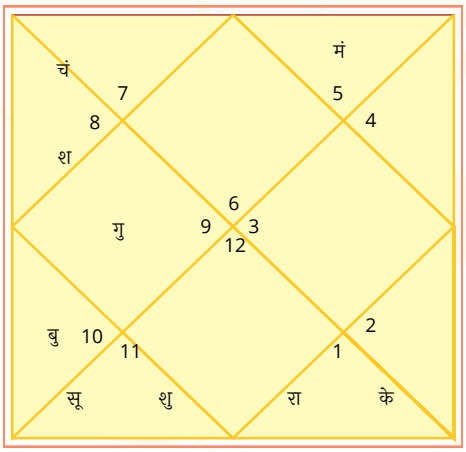

सुख, दुख, वाहन

विशमांश कुंडली

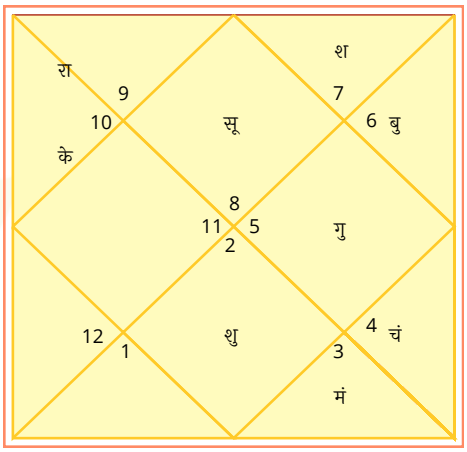

आध्यात्मिक प्रगति एवं पूजा पाठ

चतुर्विंशांश कुंडली

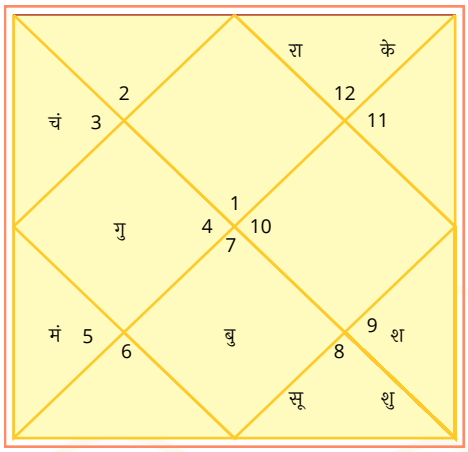

शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

भांष कुंडली

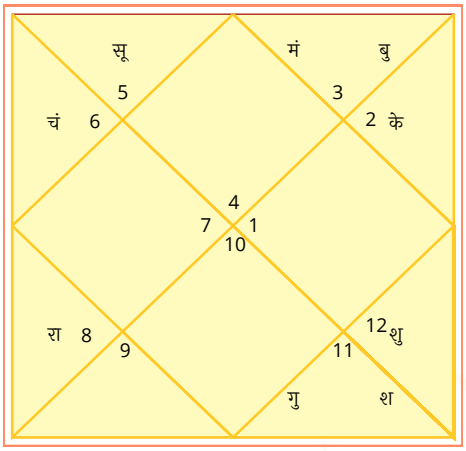

शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

त्रिषमांष कुंडली

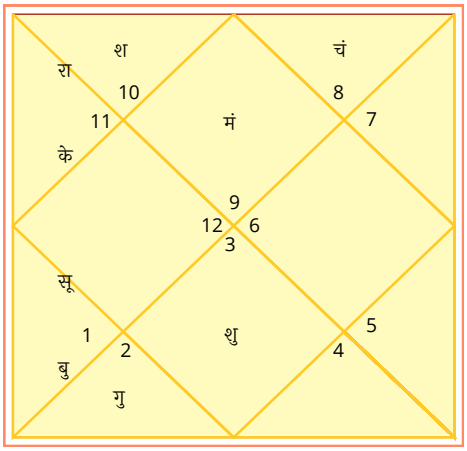

बुराई, विपत्तियां

खवेदांश कुंडली

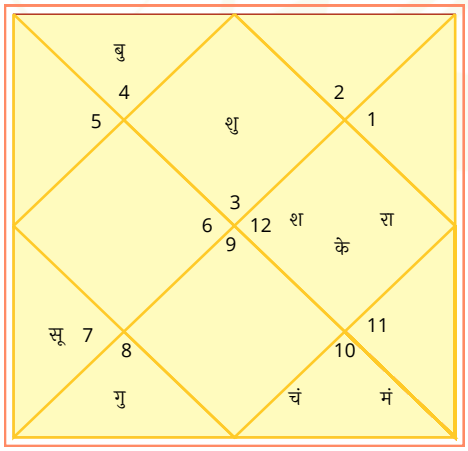

शुभ और अशुभ प्रभाव

अक्षवेदांश कुंडली

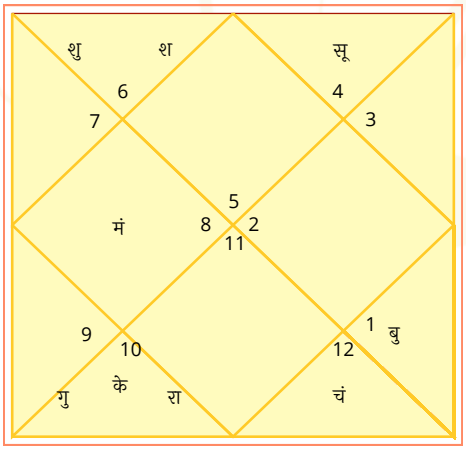

जातक का चरित्र और आचरण

षष्टयांश कुंडली

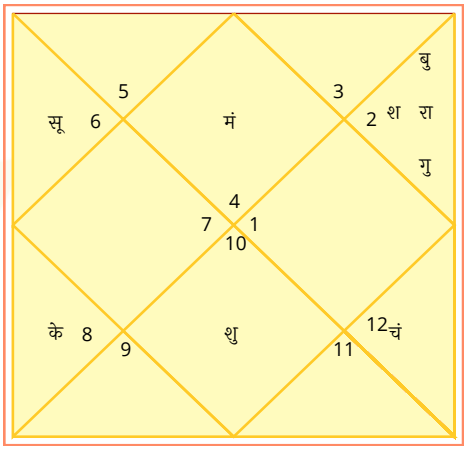

सामान्य खुशियाँ

www.pandit.com

पंचधा मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	--	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	--	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	--	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	--	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	--

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	--	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	शत्रु	शत्रु	--	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	--	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	--	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	--	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	--

www.pandit.com

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम
चंद्र	सम	--	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	सम	सम	--	अतिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र
बुध	सम	अतिशत्रु	शत्रु	--	मित्र	अतिमित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	--	अतिशत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	अतिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	--	अतिमित्र
शनि	सम	अतिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	--

www.pandit.com

कृष्णमूर्ति पद्धति ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	भाव
सूर्य	--	धनु	244:52:41	गुरु	तिसरा
चन्द्र	--	वृष	59:15:23	शुक्र	आठवाँ
मंगल	--	धनु	255:48:30	गुरु	तिसरा
बुध	हाँ	धनु	242:51:49	गुरु	तिसरा
गुरु	--	मीन	331:12:39	गुरु	छठा
शुक्र	--	तुला	199:31:12	शुक्र	पहला
शनि	--	कन्या	172:03:16	बुध	बारहवां
राहु	हाँ	धनु	248:52:49	गुरु	तिसरा
केतु	हाँ	मिथुन	68:52:49	बुध	नौवां
लग्न	--	तुला	190:47:14	शुक्र	पहला

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	चरण	सब	सब-सब
सूर्य	मूल	राहु	2	शनि	शुक्र
चन्द्र	मृगशिरा	मंगल	2	शनि	चन्द्र
मंगल	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	1	सूर्य	गुरु
बुध	मूल	राहु	1	गुरु	केतु
गुरु	पूर्व भाद्रपद	गुरु	4	मंगल	शुक्र
शुक्र	स्वाति	राहु	4	मंगल	शनि
शनि	हस्त	चन्द्र	4	शुक्र	शनि
राहु	मूल	राहु	3	शुक्र	शुक्र
केतु	आर्द्रा	राहु	1	गुरु	गुरु
लग्न	स्वाति	राहु	2	शनि	बुध

www.pandit.com

कृष्णमूर्ति पद्धति भाव संधि और कुंडली

भाव	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
1	वृश्चिक	214:47:51	मंगल	अनुराधा	शनि	शनि	मंगल
2	धनु	243:48:36	गुरु	मूल	राहु	शनि	शनि
3	मकर	274:51:25	शनि	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	शनि	गुरु
4	कुम्भ	307:26:02	शनि	शतभिसा	राहु	राहु	शनि
5	मीन	339:44:29	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	शुक्र	शनि
6	मेष	09:15:11	मंगल	अश्विनी	केतु	गुरु	राहु
7	वृष	34:47:51	शुक्र	कृतिका	सूर्य	शनि	राहु
8	मिथुन	63:48:36	बुध	मृगशिरा	मंगल	शुक्र	गुरु
9	कर्क	94:51:25	चन्द्र	पुष्य	शनि	शनि	राहु
10	सिंह	127:26:02	सूर्य	मघा	केतु	राहु	चन्द्र
11	कन्या	159:44:29	बुध	उत्तर फाल्गुनी	सूर्य	शुक्र	बुध
12	तुला	189:15:11	शुक्र	स्वाति	राहु	गुरु	बुध

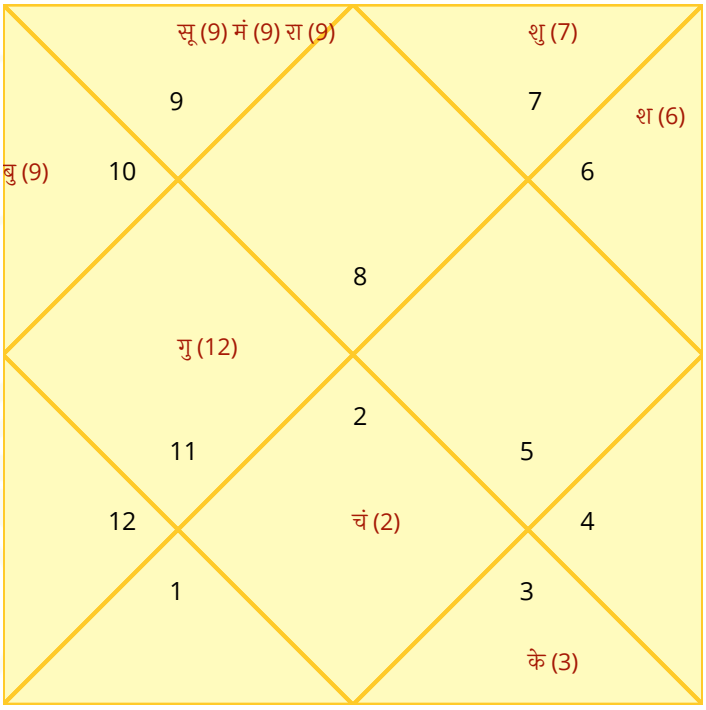

www.pandit.com

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	0	1	0	1	1	0	3
वृषभ	0	0	0	1	0	0	1	0	2
मिथुन	1	0	1	0	0	0	1	0	3
कर्क	1	1	1	0	1	0	1	1	6
सिंह	1	0	1	1	1	0	0	1	5
कन्या	1	0	1	1	0	1	1	1	6
तुला	1	1	1	1	0	0	1	0	5
वृश्चिक	0	0	0	1	1	0	0	0	2
धनु	1	0	1	0	0	0	1	1	4
मकर	1	0	1	0	1	0	0	1	4
कुंभ	0	1	0	1	0	0	0	0	2
मीन	1	1	1	0	0	1	1	1	6

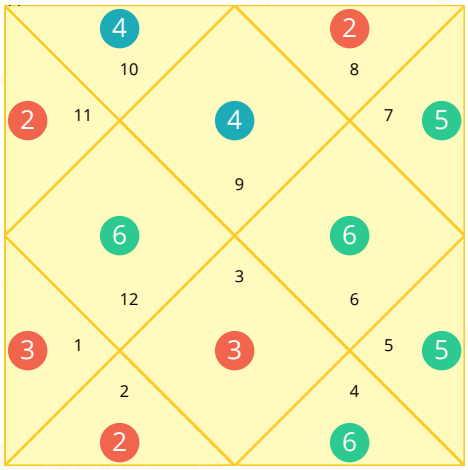

अभिप्राय

पिता | व्यक्तिगत प्रभाव | राजकीय कृपा

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

www.pandit.com

चंद्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	1	1	0	1	0	0	3
वृषभ	1	1	1	0	0	0	0	0	3
मिथुन	1	0	0	1	1	1	0	0	4
कर्क	1	1	0	1	0	1	1	1	6
सिंह	0	0	1	0	0	1	0	1	3
कन्या	1	0	1	1	1	0	0	0	4
तुला	1	1	1	1	1	0	0	0	5
वृश्चिक	0	1	0	0	0	0	1	0	2
धनु	0	0	0	1	1	1	0	1	4
मकर	0	0	1	0	1	1	1	0	4
कुंभ	1	1	1	1	1	1	1	0	7
मीन	0	1	0	1	1	0	0	1	4

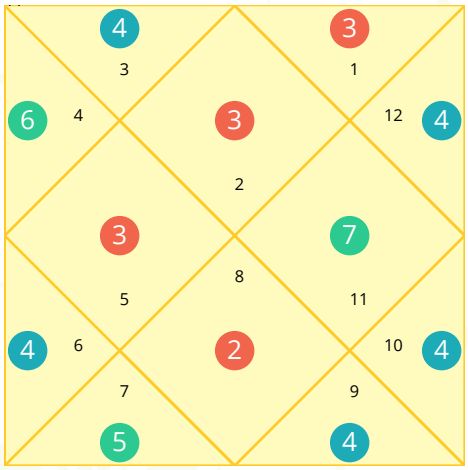

अभिप्राय

माता | मन | भावना | बुद्धि

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

www.pandit.com

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	0	1	0	0	1	0	3
वृषभ	1	0	0	1	0	1	1	0	4
मिथुन	0	0	1	0	0	0	1	0	2
कर्क	0	1	1	0	0	0	1	1	4
सिंह	0	0	0	0	1	1	0	1	3
कन्या	1	0	1	0	0	1	1	0	4
तुला	1	1	1	1	0	0	0	1	5
वृश्चिक	0	0	0	0	0	0	0	0	0
धनु	0	0	1	0	1	0	1	1	4
मकर	0	0	1	0	1	0	0	0	2
कुंभ	1	0	0	1	1	0	0	0	3
मीन	0	1	1	0	0	1	1	1	5

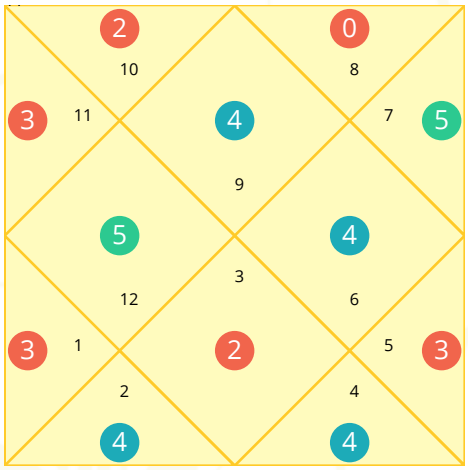

अभिप्राय

भाई-बहन | भूमि-संपत्ति | दुध?टना | विवाद

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

www.pandit.com

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	0	1	0	0	1	0	3
वृषभ	1	0	0	1	0	1	1	1	5
मिथुन	0	1	1	0	0	1	1	0	4
कर्क	0	0	1	0	0	0	1	1	3
सिंह	1	1	1	1	1	1	0	1	7
कन्या	0	0	1	1	0	0	1	0	3
तुला	1	1	1	1	1	1	1	1	8
वृश्चिक	1	0	0	1	0	1	0	1	4
धनु	0	1	1	1	0	1	1	0	5
मकर	0	0	1	0	1	1	0	1	4
कुंभ	0	1	0	1	1	1	0	0	4
मीन	0	1	1	0	0	0	1	1	4

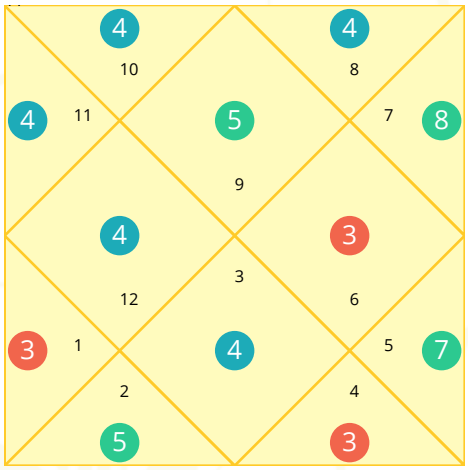

अभिप्राय

रिश्तेदार | वक्तृता | विवेकबुद्धि | शिक्षा

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

www.pandit.com

गुरु भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	0	1	1	0	0	1	3
वृषभ	0	0	0	1	1	0	0	0	2
मिथुन	1	1	1	0	1	1	0	1	6
कर्क	1	0	1	0	0	1	0	1	4
सिंह	1	0	0	1	0	1	1	1	5
कन्या	1	1	1	1	1	0	0	0	5
तुला	1	0	1	1	1	0	0	1	5
वृश्चिक	0	1	0	0	0	1	1	1	4
धनु	1	0	1	1	1	0	0	0	4
मकर	1	1	1	1	1	0	1	1	7
कुंभ	1	0	0	0	0	1	1	1	4
मीन	1	1	1	1	1	1	0	1	7

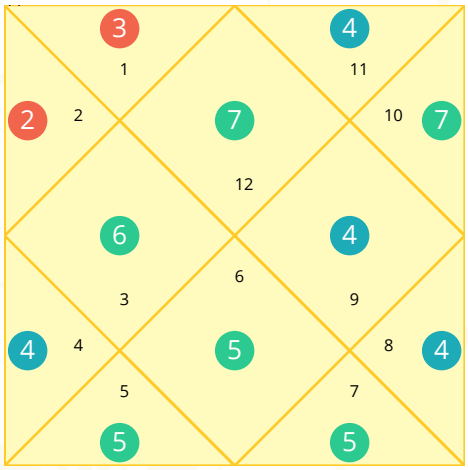

अभिप्राय

संतान | सम्मान | धार्मिक कर्म | सीखना | भाग्य

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

www.pandit.com

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	1	0	0	1	0	4
वृषभ	0	1	1	1	0	1	1	1	6
मिथुन	0	1	0	0	0	1	1	1	4
कर्क	1	1	0	0	1	1	1	0	5
सिंह	0	1	1	1	0	1	0	1	5
कन्या	0	1	0	0	0	0	0	0	1
तुला	1	0	1	1	1	1	0	1	6
वृश्चिक	1	0	1	0	1	1	1	1	6
धनु	0	1	0	0	1	1	1	1	5
मकर	0	1	0	0	1	1	1	1	5
कुंभ	0	0	1	1	0	1	0	1	4
मीन	0	1	0	0	0	0	0	0	1

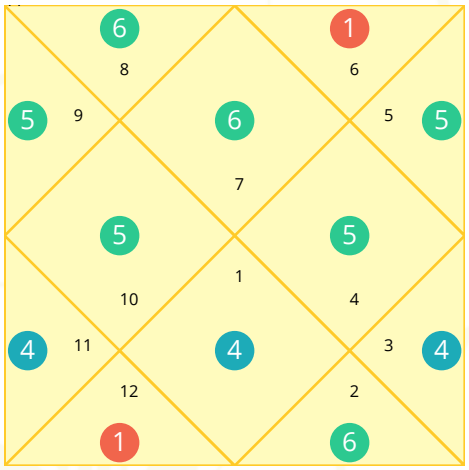

अभिप्राय

पति या पत्नी | विवाह | वाहन | आभूषण

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

www.pandit.com

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	1	0	0	0	0	0	1
वृषभ	0	0	1	1	0	0	0	0	2
मिथुन	1	0	0	0	0	0	0	0	1
कर्क	1	1	0	1	1	0	1	1	6
सिंह	0	0	0	1	1	1	0	1	4
कन्या	1	0	1	1	0	1	0	0	4
तुला	1	1	1	1	0	0	0	1	5
वृश्चिक	0	0	1	1	0	0	1	0	3
धनु	1	0	0	0	0	0	0	1	2
मकर	1	0	0	0	1	0	1	1	4
कुंभ	0	0	1	0	1	0	1	0	3
मीन	1	1	0	0	0	1	0	1	4

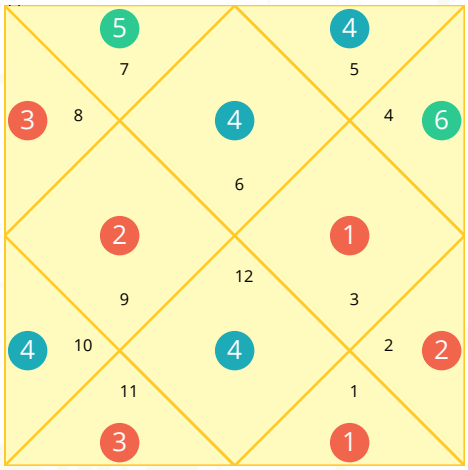

अभिप्राय

कर्मचारी | जीविका | कष्ट व शोक

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

www.pandit.com

लग्न भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	0	0	1	0	0	0	2
वृषभ	1	0	1	1	0	1	0	0	4
मिथुन	0	0	0	0	1	1	1	0	3
कर्क	0	1	0	1	1	0	1	1	5
सिंह	0	0	0	0	1	0	0	1	2
कन्या	1	0	1	1	1	0	1	0	5
तुला	1	1	1	1	0	1	0	0	5
वृश्चिक	1	0	0	0	1	1	1	0	4
धनु	0	0	1	1	1	1	1	1	6
मकर	0	0	0	1	1	1	0	0	3
कुंभ	1	1	1	0	0	1	1	0	5
मीन	1	1	0	1	1	0	0	1	5

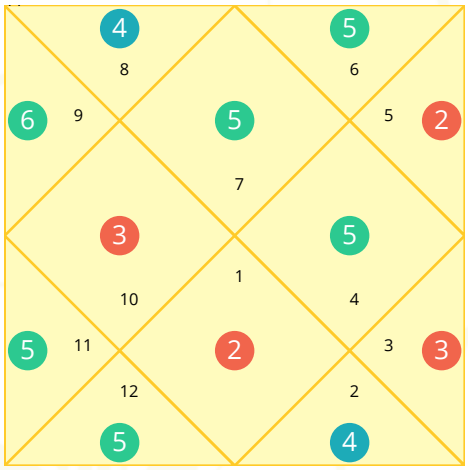

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

www.pandit.com

सर्वाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	3	3	3	3	3	4	1	0	20
वृषभ	2	3	4	5	2	6	2	0	24
मिथुन	3	4	2	4	6	4	1	0	24
कर्क	6	6	4	3	4	5	6	0	34
सिंह	5	3	3	7	5	5	4	0	32
कन्या	6	4	4	3	5	1	4	0	27
तुला	5	5	5	8	5	6	5	0	39
वृश्चिक	2	2	0	4	4	6	3	0	21
धनु	4	4	4	5	4	5	2	0	28
मकर	4	4	2	4	7	5	4	0	30
कुंभ	2	7	3	4	4	4	3	0	27
मीन	6	4	5	4	7	1	4	0	31

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

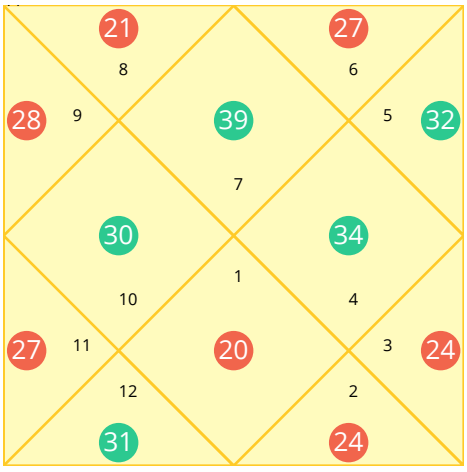

www.pandit.com

विम्शोत्तरी दशा - I

मंगल

11-11-2007 07:10
11-11-2014 01:10

मंगल	08-04-2008 10:37
राहु	26-04-2009 22:55
गुरु	02-04-2010 20:31
शनि	12-05-2011 16:10
बुध	08-05-2012 21:07
केतु	05-10-2012 00:34
शुक्र	05-12-2013 03:34
सूर्य	11-04-2014 23:40
चन्द्र	11-11-2014 01:10

राहु

11-11-2014 01:10
10-11-2032 13:10

राहु	24-07-2017 05:22
गुरु	17-12-2019 19:46
शनि	23-10-2022 18:52
बुध	12-05-2025 04:10
केतु	30-05-2026 16:28
शुक्र	30-05-2029 10:28
सूर्य	24-04-2030 03:52
चन्द्र	24-10-2031 00:52
मंगल	10-11-2032 13:10

गुरु

10-11-2032 13:10
10-11-2048 13:10

गुरु	29-12-2034 17:58
शनि	12-07-2037 01:10
बुध	17-10-2039 22:46
केतु	22-09-2040 20:22
शुक्र	24-05-2043 20:22
सूर्य	12-03-2044 01:10
चन्द्र	12-07-2045 01:10
मंगल	17-06-2046 22:46
राहु	10-11-2048 13:10

शनि

10-11-2048 13:10
11-11-2067 07:10

शनि	14-11-2051 08:13
बुध	24-07-2054 11:22
केतु	02-09-2055 07:01
शुक्र	01-11-2058 22:01
सूर्य	14-10-2059 21:43
चन्द्र	15-05-2061 05:13
मंगल	24-06-2062 00:52
राहु	29-04-2065 23:58
गुरु	11-11-2067 07:10

बुध

11-11-2067 07:10
10-11-2084 13:10

बुध	08-04-2070 22:37
केतु	06-04-2071 03:34
शुक्र	04-02-2074 00:34
सूर्य	11-12-2074 11:40
चन्द्र	11-05-2076 22:10
मंगल	09-05-2077 03:07
राहु	26-11-2079 12:25
गुरु	03-03-2082 10:01
शनि	10-11-2084 13:10

केतु

10-11-2084 13:10
11-11-2091 07:10

केतु	08-04-2085 16:37
शुक्र	08-06-2086 19:37
सूर्य	14-10-2086 15:43
चन्द्र	15-05-2087 17:13
मंगल	11-10-2087 20:40
राहु	29-10-2088 08:58
गुरु	05-10-2089 06:34
शनि	14-11-2090 02:13
बुध	11-11-2091 07:10

www.pandit.com

विम्शोत्तरी दशा - II

शुक्र		सूर्य		चन्द्र	
11-11-2091 07:10 12-11-2111 07:10		12-11-2111 07:10 11-11-2117 19:10		11-11-2117 19:10 12-11-2127 07:10	
शुक्र	12-03-2095 19:10	सूर्य	29-02-2112 20:58	चन्द्र	12-09-2118 04:10
सूर्य	12-03-2096 01:10	चन्द्र	30-08-2112 11:58	मंगल	13-04-2119 05:40
चन्द्र	10-11-2097 19:10	मंगल	05-01-2113 08:04	राहु	12-10-2120 02:40
मंगल	10-01-2099 22:10	राहु	30-11-2113 01:28	गुरु	11-02-2122 02:40
राहु	11-01-2102 16:10	गुरु	18-09-2114 06:16	शनि	12-09-2123 10:10
गुरु	11-09-2104 16:10	शनि	31-08-2115 05:58	बुध	10-02-2125 20:40
शनि	12-11-2107 07:10	बुध	06-07-2116 17:04	केतु	11-09-2125 22:10
बुध	12-09-2110 04:10	केतु	11-11-2116 13:10	शुक्र	13-05-2127 16:10
केतु	12-11-2111 07:10	शुक्र	11-11-2117 19:10	सूर्य	12-11-2127 07:10

वर्त्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	राहु	11-11-2014 01:10	10-11-2032 13:10
अंतर्दशा	बुध	23-10-2022 18:52	12-05-2025 04:10
प्रत्यंतर दशा	शनि	15-12-2024 16:54	12-05-2025 04:10
सूक्ष्म दशा	शनि	15-12-2024 16:54	08-01-2025 01:17

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

www.pandit.com

योगिनी दशा - I

संकटा (8 वर्ष)

2-6-2007 17:51
2-6-2015 17:51

संकटा	13-3-2009 1:51
मंगला	2-6-2009 5:51
पिंगला	11-11-2009 13:51
धान्य	13-7-2010 1:51
भ्रामरी	2-6-2011 17:51
भद्रिका	12-7-2012 13:51
उल्का	11-11-2013 13:51
सिद्धि	2-6-2015 17:51

मंगला (1 वर्ष)

2-6-2015 17:51
2-6-2016 17:51

मंगला	12-6-2015 21:21
पिंगला	3-7-2015 4:21
धान्य	2-8-2015 14:51
भ्रामरी	12-9-2015 4:51
भद्रिका	1-11-2015 22:21
उल्का	1-1-2016 19:21
सिद्धि	12-3-2016 19:51
संकटा	2-6-2016 17:51

पिंगला (2 वर्ष)

2-6-2016 17:51
2-6-2018 17:51

पिंगला	13-7-2016 7:51
धान्य	12-9-2016 4:51
भ्रामरी	2-12-2016 8:51
भद्रिका	13-3-2017 19:51
उल्का	13-7-2017 13:51
सिद्धि	2-12-2017 14:51
संकटा	13-5-2018 22:51
मंगला	2-6-2018 17:51

धान्य (3 वर्ष)

2-6-2018 17:51
2-6-2021 17:51

धान्य	2-9-2018 1:21
भ्रामरी	1-1-2019 19:21
भद्रिका	2-6-2019 23:51
उल्का	2-12-2019 14:51
सिद्धि	2-7-2020 16:21
संकटा	3-3-2021 4:21
मंगला	2-4-2021 14:51
पिंगला	2-6-2021 17:51

भ्रामरी (4 वर्ष)

2-6-2021 17:51
2-6-2025 17:51

भ्रामरी	12-11-2021 1:51
भद्रिका	2-6-2022 23:51
उल्का	1-2-2023 11:51
सिद्धि	12-11-2023 13:51
संकटा	2-10-2024 5:51
मंगला	11-11-2024 19:51
पिंगला	31-1-2025 23:51
धान्य	2-6-2025 17:51

भद्रिका (5 वर्ष)

2-6-2025 17:51
2-6-2030 17:51

भद्रिका	11-2-2026 9:21
उल्का	12-12-2026 18:21
सिद्धि	2-12-2027 20:51
संकटा	11-1-2029 16:51
मंगला	3-3-2029 10:21
पिंगला	12-6-2029 21:21
धान्य	12-11-2029 1:51
भ्रामरी	2-6-2030 17:51

www.pandit.com

योगिनी दशा - II

उल्का (6 वर्ष)

2-6-2030 17:51
2-6-2036 17:51

उल्का	2-6-2031 23:51
सिद्धि	2-8-2032 2:51
संकटा	2-12-2033 2:51
मंगला	31-1-2034 23:51
पिंगला	2-6-2034 17:51
धान्य	2-12-2034 8:51
भ्रामरी	2-8-2035 20:51
भद्रिका	2-6-2036 17:51

सिद्धि (7 वर्ष)

2-6-2036 17:51
2-6-2043 17:51

सिद्धि	12-10-2037 21:21
संकटा	4-5-2039 1:21
मंगला	14-7-2039 1:51
पिंगला	3-12-2039 2:51
धान्य	3-7-2040 4:21
भ्रामरी	13-4-2041 6:21
भद्रिका	3-4-2042 8:51
उल्का	2-6-2043 17:51

संकटा (8 वर्ष)

2-6-2043 17:51
2-6-2051 17:51

संकटा	13-3-2045 1:51
मंगला	2-6-2045 5:51
पिंगला	11-11-2045 13:51
धान्य	13-7-2046 1:51
भ्रामरी	2-6-2047 17:51
भद्रिका	12-7-2048 13:51
उल्का	11-11-2049 13:51
सिद्धि	2-6-2051 17:51

मंगला (1 वर्ष)

2-6-2051 17:51
2-6-2052 17:51

मंगला	12-6-2051 21:21
पिंगला	3-7-2051 4:21
धान्य	2-8-2051 14:51
भ्रामरी	12-9-2051 4:51
भद्रिका	1-11-2051 22:21
उल्का	1-1-2052 19:21
सिद्धि	12-3-2052 19:51
संकटा	2-6-2052 17:51

पिंगला (2 वर्ष)

2-6-2052 17:51
2-6-2054 17:51

पिंगला	13-7-2052 7:51
धान्य	12-9-2052 4:51
भ्रामरी	2-12-2052 8:51
भद्रिका	13-3-2053 19:51
उल्का	13-7-2053 13:51
सिद्धि	2-12-2053 14:51
संकटा	13-5-2054 22:51
मंगला	2-6-2054 17:51

धान्य (3 वर्ष)

2-6-2054 17:51
2-6-2057 17:51

धान्य	2-9-2054 1:21
भ्रामरी	1-1-2055 19:21
भद्रिका	2-6-2055 23:51
उल्का	2-12-2055 14:51
सिद्धि	2-7-2056 16:21
संकटा	3-3-2057 4:21
मंगला	2-4-2057 14:51
पिंगला	2-6-2057 17:51

www.pandit.com

योगिनी दशा - III

भ्रामरी (4 वर्ष)

2-6-2057 17:51
2-6-2061 17:51

भ्रामरी	12-11-2057 1:51
भद्रिका	2-6-2058 23:51
उल्का	1-2-2059 11:51
सिद्धि	12-11-2059 13:51
संकटा	2-10-2060 5:51
मंगला	11-11-2060 19:51
पिंगला	31-1-2061 23:51
धान्य	2-6-2061 17:51

भद्रिका (5 वर्ष)

2-6-2061 17:51
2-6-2066 17:51

भद्रिका	11-2-2062 9:21
उल्का	12-12-2062 18:21
सिद्धि	2-12-2063 20:51
संकटा	11-1-2065 16:51
मंगला	3-3-2065 10:21
पिंगला	12-6-2065 21:21
धान्य	12-11-2065 1:51
भ्रामरी	2-6-2066 17:51

उल्का (6 वर्ष)

2-6-2066 17:51
2-6-2072 17:51

उल्का	2-6-2067 23:51
सिद्धि	2-8-2068 2:51
संकटा	2-12-2069 2:51
मंगला	31-1-2070 23:51
पिंगला	2-6-2070 17:51
धान्य	2-12-2070 8:51
भ्रामरी	2-8-2071 20:51
भद्रिका	2-6-2072 17:51

सिद्धि (7 वर्ष)

2-6-2072 17:51
2-6-2079 17:51

सिद्धि	12-10-2073 21:21
संकटा	4-5-2075 1:21
मंगला	14-7-2075 1:51
पिंगला	3-12-2075 2:51
धान्य	3-7-2076 4:21
भ्रामरी	13-4-2077 6:21
भद्रिका	3-4-2078 8:51
उल्का	2-6-2079 17:51

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

www.pandit.com

चर दशा

तुला (12 वर्ष)

21-12-2010
21-12-2022

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060
कन्या	21-4-2061
तुला	21-12-2061
वृश्चिक	21-8-2062
धनु	21-4-2063
मकर	21-12-2063
कुम्भ	21-8-2064
मीन	21-4-2065
मेष	21-12-2065

वृश्चिक (11 वर्ष)

21-12-2022
21-12-2033

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060
कन्या	21-4-2061
तुला	21-12-2061
वृश्चिक	21-8-2062
धनु	21-4-2063
मकर	21-12-2063
कुम्भ	21-8-2064
मीन	21-4-2065
मेष	21-12-2065

धनु (3 वर्ष)

21-12-2033
21-12-2036

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060
कन्या	21-4-2061
तुला	21-12-2061
वृश्चिक	21-8-2062
धनु	21-4-2063
मकर	21-12-2063
कुम्भ	21-8-2064
मीन	21-4-2065
मेष	21-12-2065

मकर (4 वर्ष)

21-12-2036
21-12-2040

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060
कन्या	21-4-2061
तुला	21-12-2061
वृश्चिक	21-8-2062

कुम्भ (5 वर्ष)

21-12-2040
21-12-2045

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060
कन्या	21-4-2061
तुला	21-12-2061
वृश्चिक	21-8-2062

मीन (12 वर्ष)

21-12-2045
21-12-2057

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060
कन्या	21-4-2061
तुला	21-12-2061
वृश्चिक	21-8-2062

www.pandit.com

धनु	21-4-2063
मकर	21-12-2063
कुम्भ	21-8-2064
मीन	21-4-2065
मेष	21-12-2065

धनु	21-4-2063
मकर	21-12-2063
कुम्भ	21-8-2064
मीन	21-4-2065
मेष	21-12-2065

धनु	21-4-2063
मकर	21-12-2063
कुम्भ	21-8-2064
मीन	21-4-2065
मेष	21-12-2065

मेष (8 वर्ष)

21-12-2057
21-12-2065

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060
कन्या	21-4-2061
तुला	21-12-2061
वृश्चिक	21-8-2062
धनु	21-4-2063
मकर	21-12-2063
कुम्भ	21-8-2064
मीन	21-4-2065
मेष	21-12-2065

वृष (5 वर्ष)

21-12-2065
21-12-2070

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060
कन्या	21-4-2061
तुला	21-12-2061
वृश्चिक	21-8-2062
धनु	21-4-2063
मकर	21-12-2063
कुम्भ	21-8-2064
मीन	21-4-2065
मेष	21-12-2065

मिथुन (6 वर्ष)

21-12-2070
21-12-2076

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060
कन्या	21-4-2061
तुला	21-12-2061
वृश्चिक	21-8-2062
धनु	21-4-2063
मकर	21-12-2063
कुम्भ	21-8-2064
मीन	21-4-2065
मेष	21-12-2065

कर्क (2 वर्ष)

21-12-2076
21-12-2078

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060

सिंह (8 वर्ष)

21-12-2078
21-12-2086

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060

कन्या (9 वर्ष)

21-12-2086
21-12-2095

वृष	21-8-2058
मिथुन	21-4-2059
कर्क	21-12-2059
सिंह	21-8-2060

www.pandit.com

कन्या	21-4-2061	कन्या	21-4-2061	कन्या	21-4-2061
तुला	21-12-2061	तुला	21-12-2061	तुला	21-12-2061
वृश्चिक	21-8-2062	वृश्चिक	21-8-2062	वृश्चिक	21-8-2062
धनु	21-4-2063	धनु	21-4-2063	धनु	21-4-2063
मकर	21-12-2063	मकर	21-12-2063	मकर	21-12-2063
कुम्भ	21-8-2064	कुम्भ	21-8-2064	कुम्भ	21-8-2064
मीन	21-4-2065	मीन	21-4-2065	मीन	21-4-2065
मेष	21-12-2065	मेष	21-12-2065	मेष	21-12-2065

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

www.pandit.com

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त	कुलिक	वासुकी	शंखपाल
पद्म	महापद्म	तक्षक	कर्कोटक
शंखचूड़	घातक	विषधर	शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

!!

आपकी जन्मपत्रिका में कालसर्प दोष नहीं है।

कालसर्प नाम

नहीं

दिशा

--

www.pandit.com

कालसर्प दोष का प्रभाव

सामान्यतः काल सर्प दोष/योग जीवन के सभी पहलुओं में संघर्ष देता है, फिर चाहे वह स्वास्थ्य, धन, करियर, व्यवसाय, प्रेम, विवाह, संतान तथा जीवन से संबंधित कई अन्य मामलें हों । परन्तु, जातक की कुंडली में उपस्थित काल सर्प दोष/योग के सटीक प्रभाव को जानना अति आवश्यक है । क्या यह दोष/योग स्वास्थ्य, धन, कैरियर, व्यवसाय, प्रेम, विवाह, संतति या हमारे जीवन से संबंधित अन्य चीजों में बुरा प्रभाव और संघर्ष दे रहा है? यह आप कैसे जान सकते हैं ?

इसका निर्णय जन्म कुंडली के विभिन्न भावों में राहु तथा केतु की स्तिथि को जानकर हो सकता है । उद्धारणार्थ, यदि राहु लग्न में और केतु सप्तम भाव में स्तिथ हों तो व्यक्ति को स्वास्थ्य और धन में कठिनाइयों आ सकती हैं क्योंकि प्रथम भाव जातक की सेहत तथा जीवन संघर्ष का सूचक है । उसी प्रकार, यदि राहु द्वितीय भाव में हो तो व्यक्ति को उसी भाव से सम्बंधित मामलों जैसे पारिवारिक रिश्तों तथा धन प्राप्ति में संघर्ष और कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है । तो इस प्रकार, जन्म कुंडली के बारह भावों में बन रहे काल सर्प दोष/योग के प्रभावों के अंकन से बारह प्रकार के काल सर्प दोष/योग बनते हैं ।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें ।

- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।

- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें

- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंर्तदशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।

- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।

- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।

- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।

- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नमः शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

www.pandit.com

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	33%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है और प्रभावी है, मिलान के समय इसका ध्यान रखे। आप मांगलिक हैं ।

www.pandit.com

भाव के आधार पर

शनि द्वादश भाव में आपके कुंडली में स्थित है।

दृष्टि के आधार पर

केतु , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को केतु देख रहा है।

सप्तम भाव राहु से दृष्ट है।

शनि की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |

- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |

- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |

- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |

- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |

- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुशप्रभाव में लाभ मिलता है |

- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |

- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |

www.pandit.com

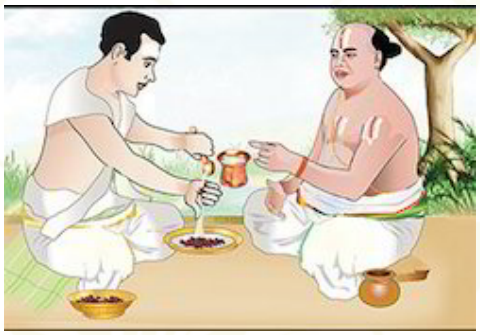

पितृ दोष क्या होता है ?

पितृ दोष पूर्वजों की एक कार्मिक ऋण है और ग्रहों के संयोजन के रूप में जन्म कुंडली में परिलक्षित होता है। यह पूर्वजों की उपेक्षा के कारण भी होता है और श्राद्ध या दान या आध्यात्मिक उत्थान का यथोचित प्रबंध न करने के कारण भी पितृ दोष हो सकता है।

पितृ दोष विश्लेषण

क्या पितृ दोष आपकी कुंडली में उपस्थित है ?	नहीं

जिन नियमों पर हमने आपकी कुंडली परखी है उसके अनुसार आप पितृ दोष से मुक्त हैं।

www.pandit.com

साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छ: मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है

साढ़ेसाती दोष उपस्थित नहीं है।

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिनाकं	3-1-2025
शनि राशि	कुम्भ
चंद्र राशि	वृष
वक्री शनि	नहीं

www.pandit.com

साढ़ेसाती विश्लेषण - II

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
वृष	मेष	--	उदय प्रारम्भ	3-6-2027	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृष	मेष	हाँ	उदय समाप्त	19-10-2027	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृष	मेष	हाँ	उदय समाप्त	20-10-2027	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृष	मेष	हाँ	उदय समाप्त	21-10-2027	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृष	मेष	--	उदय प्रारम्भ	23-2-2028	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृष	वृष	--	शिखर प्रारम्भ	8-8-2029	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृष	वृष	हाँ	उदय प्रारम्भ	5-10-2029	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृष	वृष	--	शिखर प्रारम्भ	17-4-2030	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृष	कर्क	--	अस्त समाप्त	13-7-2034	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृष	मेष	--	उदय प्रारम्भ	7-4-2057	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृष	वृष	--	शिखर प्रारम्भ	28-5-2059	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृष	मिथुन	--	अस्त प्रारम्भ	11-7-2061	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृष	मिथुन	हाँ	शिखर प्रारम्भ	13-2-2062	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृष	मिथुन	--	अस्त प्रारम्भ	7-3-2062	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृष	कर्क	--	अस्त समाप्त	24-8-2063	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृष	कर्क	हाँ	अस्त प्रारम्भ	5-2-2064	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृष	कर्क	--	अस्त समाप्त	9-5-2064	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृष	मेष	--	उदय प्रारम्भ	21-5-2086	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृष	मेष	हाँ	उदय समाप्त	10-11-2086	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृष	मेष	--	उदय प्रारम्भ	8-2-2087	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृष	वृष	--	शिखर प्रारम्भ	18-7-2088	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।

www.pandit.com

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
वृष	वृष	हाँ	उदय प्रारम्भ	30-10-2088	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृष	वृष	--	शिखर प्रारम्भ	5-4-2089	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृष	मिथुन	--	अस्त प्रारम्भ	19-9-2090	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृष	मिथुन	हाँ	शिखर प्रारम्भ	25-10-2090	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृष	मिथुन	--	अस्त प्रारम्भ	21-5-2091	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृष	कर्क	--	अस्त समाप्त	2-7-2093	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।

www.pandit.com

साढ़े सती उपाय

- साढ़ेसाती के अनिष्ट प्रभावों को काम करने के उपाय निम्नलिखित है -

- साढ़े साती की परेशानी से बचने के लिए नियमित हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

- इस ग्रह दशा से बचने के लिए काले घोड़े की नाल की अंगूठी बनाकर उसे दाएं हाथ की मध्यमा उंगली में पहनना चाहिए।

- शनि देव को शनिवार के दिन सरसों का तेल और तांबा भेट करना चाहिए।

- किसी गरीब व्यक्ति को काले कंबल का दान करें।

- शिवलिंग पर काले तिल अर्पित करें और जल चढ़ाएं।

- हर मंगलवार और शनिवार ऊँ रामदूताय नमः मंत्र का जप करें। मंत्र जप की संख्या कम से कम 108 करे।

- धार्मिक आचरण बनाए रखें और किसी का अनादर न करें।

- हर शनिवार को शनि के निमित्त तेल का दान करें। तेल दान करने से पहले तेल में अपना चेहरा देख लेना चाहिए। यह उपाय हर शनिवार किया जाना चाहिए।

- शनि बीज मंत्र - ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः प्रतिदिन 108 बार अवश्य करें

- शनि प्रकोप से मुक्ति के लिए सुंदर काण्ड का नियमित पाठ अवश्य करें।

- रोटी में तेल लगाकर कुत्ते या कौए को खिलाएं।

www.pandit.com

रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।

जीवन रत्न

हीरा

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

कारक रत्न

नीलम

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

पन्ना

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

www.pandit.com

जीवन रत्न - हीरा

विकल्प	ओपल / जिरकॉन	दिन	शुक्रवार
उंगली	कनिष्ठा	अधिदेवता	शुक्र
भार	1 - 4.25 कैरेट	धातु	चांदी

विवरण

हीरा रत्न का स्वामी ग्रह शुक्र है । हीरा धारण करने से धैर्य, सफलता, धन, समृद्धि, निर्मलता की प्राप्ति होती है । हीरा धारण करने वाला व्यक्ति निडर, बुद्धिमान और शिष्ट होता है। हीरा पहनने से धारक धार्मिक शास्त्रों में प्रवीण बनाता है। यह रत्न बुरी आत्माओं के हानिकारक प्रभावों और साँप के दंश से भी संरक्षण करता है।

भार व धातु

वजन में १-१/२ कैरेट का दोषरहित हीरा पहनना चाहिए । इसे प्लटिनम या चांदी की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

हीरा को शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । हीरा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

हीरे की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, हीरा को दाहिने हाथ की छोटी उंगली अर्थात कनिष्ठा में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

हीरा के स्थान पर सफेद नीलम, सफेद जिक्रोन और सफेद तूरमली आदि विकल्प रत्नों को भी धारण किया सकता है ।

सावधानी

हीरा को माणिक, मोती, लाल मूंगा और पुखराज के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

www.pandit.com

कारक रत्न - नीलम

विकल्प	नीली	दिन	शनिवार
उंगली	मध्यमिका	अधिदेवता	शनि
भार	3 - 4.25 कैरेट	धातु	चांदी

विवरण

नीलम रत्न का स्वामी ग्रह शनि है । नीलम धारण करने से स्वास्थ्य, धन, दीर्घायु, सुख, समृद्धि, नाम और यश की प्राप्ति होती है ।

भार व धातु

वजन में कम से कम ५ कैरेट का दोषरहित नीलम पहनना चाहिए । इसे स्टील या अष्ट धातु से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

नीलम रत्न को किसी भी शनिवार को सूर्यास्त से दो घंटे पहले धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । नीलम धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, नीलम को मध्यमा अर्थात बीच की अंगुली में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

नीलम के स्थान पर नीला जिक्रोन, जामुनिया, नीली तूरमुली, लाजावर्द, ब्लू स्पिनल और नीली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि नीलम को माणिक, मोती, लाल मूंगा और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

www.pandit.com

भाग्य रत्न - पन्ना

विकल्प	हरा गोमेद	दिन	बुधवार
उंगली	कनिष्ठा	अधिदेवता	बुद्ध
भार	4 - 6.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

पन्ना का स्वामी ग्रह बुध है । पन्ना धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, बलवान शरीर, धन, संपत्ति और अच्छी नेत्र दृष्टि की प्राप्ति होती है । यह दुष्ट आत्माओं, सर्प दंश और बुरी नज़र से कुप्रभावों से बचाता है। पन्ना मिर्गी एवं पागलपन के इलाज और बुरे स्वप्नों से संरक्षण में भी सहायक है ।

भार व धातु

पन्ना का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

पन्ना रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी बुधवार को सूर्योदय के दो घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पन्ना धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ ब्रां ब्रीं सः बुधाय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

पन्ना की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, पन्ना की अंगूठी को दाहिने हाथ की कनिष्ठा अर्थात छोटी उंगली में धारण करें ।

विकल्प

पन्ना के स्थान पर अक्वामरीन (हरित नील), पेरिडोट, हरा जिक्रोन, ग्रीन एगेट या हरा जेड(हरिताश्म) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि पन्ना को लाल मूंगा, मोती, पुखराज और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

www.pandit.com

चार मुखी रुद्राक्ष+ दो मुखी रुद्राक्ष

आपको चार तथा दो मुखी रुद्राक्ष के संयोजन को धारण करने का सुझाव दिया जाता है।

दो मुखी रुद्राक्ष का स्वामी ग्रह चन्द्रमा है। यह चंद्रमा के दुष्प्रभावों को तथा बाई आँख, किडनी, आँतों, इत्यादि रोगों को नियंत्रित करता है। दो मुखी रुद्राक्ष शिव-पार्वती का प्रतीक होता है। दो मुखी रुद्राक्ष को धारण करने के प्रभाव से परिवार में शांति आती है तथा यह दो व्यक्तियों के मध्य बेहतर रिश्तों के विकास में मदद करता है। चन्द्रमा के दुष्प्रभाव इसके द्वारा नियंत्रित होते हैं। इसका स्वामी ग्रह बुध है तथा यह ब्रह्मा का प्रतीक है। इसके पूरे प्रभाव और दिव्यता में ब्रह्मा की शक्ति मौजूद है। यह रुद्राक्ष बुध के दुष्प्रभावों को प्रभावहीन कर देता है तथा देवी सरस्वती को प्रसन्न करता है। यह तार्किक तथा सरंचनात्मक सोच को भी बढ़ावा देता है। यह मानसिक शक्ति, बुद्धि, ज्ञान तथा एकाग्रता को बढ़ाने में मदद करता है। यह समझ तथा बुद्धि को बढ़ता है। यह मुखी तर्क तथा एकाग्रता तथा सरंचनात्मक सोच को नियंत्रित करता है।

www.pandit.com

शुभाशुभ अंक

9	3	1
भाग्यांक	मूलांक	नामांक

आपका नाम	Rohan Desai
जन्म दिनांक	21-12-2010
मूलांक	3
मूलांक स्वामी	गुरु
मित्र अंक	7,5,6,9
सम अंक	1,2
शत्रु अंक	4,8
शुभ दिन	मंगलवार, गुरूवार, शुक्रवार
शुभ रत्न	पीला नीलम
शुभ उपरत्न	पुखराज, पीला तुरमली
शुभ देवता	विष्णु
शुभ धातु	सोना
शुभ रंग	पीला
शुभ मंत्र	|| ओम ह्रिंग गुरवे नमः ||

www.pandit.com

आपके बारे में

आपका मूलांक तीन हैं । मूलांक तीन का स्वामी गुरु है । गुरु ग्रह के प्रभाववश आप अनुशासन के मामले में काफी कठोर रहेंगे तथा अपने अधीनस्थों से सख्ती से कार्य लेंगे । काम में ढील या शिथिलता बर्दाश्त नहीं करेंगे । इस कारण कभी कभी आपके मातहत ही आपसे शत्रुता करने लगेंगे। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे और दूसरों पर शासन करने की आपकी सहज इच्छा रहेगी । गुरु ग्रह के प्रभाववश आपकी विचारधारा धार्मिक रहेगी तथा विद्या, अध्ययन, अध्यापन, बौद्धिक स्तर क कार्य तथा धर्म - कर्म के क्षेत्र में आपको अच्छी उपलब्धियाँ एवं ख्याति प्राप्त होगी। मानसिक रूप से आप काफी संतुलित एवं विकसित व्यक्ति होंगे तथा किसी भी विषय को समझने की आप में विशेष क्षमता रहेगी। तर्क एवं ज्ञान शक्ति आपकी अच्छी रहेगी। आप मन से किसी का भी अहित नहीं करेंगे और दूसरों की भलाई करने में भी अपना समय देते रहेंगे। दान - पुण्य के कार्य भी आप काफी करेंगे। सामाजिक स्थिति आपकी काफी अच्छी रहेगी। समाज में आप अग्रणी एवं मुखिया पद का निर्वहन करना अधिक पसंद करेंगे। दूसरों को सच्ची सलाह देना आप अपना धर्म समझेंगे। स्वभाव से आप शांत, कोमल, ह्रदय, मृदुवाणी एवं सत्यवक्ता होंगे। सत्य के मार्ग पर आप चलते हुए कष्टों को भी सहन करेंगे एवं अंत में विजयश्री को प्राप्त करेंगे। स्वास्थ्य आपका साधारणतः अनुकूल ही रहेगा | लेकिन कभी - कभी मंदाग्नि, जठराग्नि, उदार विकार इत्यादि रोगों का सामना करना पड़ेगा।

शुभ व्रत समय

बृहस्पतिवार को बृहस्पति अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र धारण कर व्रत करें। पीला भोजन ग्रहण करें एवं पीले पदार्थों का दान करें। यह व्रत तीन वर्ष, एक वर्ष या सोलह बृहस्पतिवारों को करें। यथाशक्ति पुत्रजीवी की माला पर गुरु मंत्र का जप करें।

www.pandit.com

शुभ देवता

आप बृहस्पति ग्रह की उपासना करें अथवा विष्णु भगवान की आराधना करें। भगवान विष्णु के द्वादशाक्षरी मंत्र ' ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान विष्णु के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

शुभ गायत्री मंत्र

आपके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा। गुरु गायत्री मंत्र - ||ॐ अंगिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्त।|

शुभ ध्यान समय

प्रातः काल उठ कर गुरु का ध्यान करें, मन में गुरु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात निम्न मंत्र का पाठ करें। देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।

www.pandit.com

शुभ मंत्र

अशुभ गुरु को अनुकूल बनाने हेतु गुरु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ आठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे। ||ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः। जप संख्या 10000||

आपके के लिए शुभ समय

सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन प्रभावियों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना आपके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

www.pandit.com

शुभ वास्तु

आपके लिए ऐसे मकान में रहना शुभ रहेगा जिसका मूलांक या नामंक 3 हो। ईशान कोण दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप शहर की ईशान कोण दिशा में अपना निवास बना सकते हैं। इस दिशा में रोजगार - व्यापार संबंधी कार्य करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों के होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा और यदि आप दीवारें, पर्दे, फर्नीचर का रंग भी ऐसा ही रखें तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली आएगी।

www.pandit.com

लग्न फल - तुला

स्वामी	शुक्र
प्रतीक	तुला
विशेषताएँ	वायु तत्व, चर, पश्चिम
भाग्यशाली रत्न	पन्ना
व्रत का दिन	मंगलवार

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||

तुला लग्न के व्यक्ति आकर्षक, सुसंस्कृत , कुछ मायनों में आकर्षक, विनीत, चित्ताकर्षक, अस्थिरचित्त , सहयोगी , मिलनसार, रचनात्मक, कलात्मक, शायद संगीत के प्रति इच्छुक, सामंजस्यपूर्ण, और दूसरों के लिए समस्या पैदा करने वाले नहीं अपितु उनको प्रसन्नचित्त रखने वाले होते हैं ।

आप दूसरों की स्वीकृति और समर्थन चाहने वाले व्यक्ति हैं। आप को दूसरों के साथ की "ज़रूरत"रहती है और अकेले रहना नापसंद करते हैं। आप दूसरों को खुश करने के लिए जीतोड़ मेहनत करते हैं और दूसरों द्वारा पसंद किये जाने अथवा लोकप्रिय होने के लिए स्वयं के सिद्धांतों से भी समझौता कर लेते हैं।

> " तब भी आप एक बहुत आत्म केन्द्रित व्यक्ति है। किसी को भी "ना" कहना आपके लिए एक कठिन कार्य है । आप को अनियमितता और असंगति बर्दाश्त नहीं होती और आप सब कुछ तैयार, संतुलित, और अविरोध चाहते हैं ।

किसी भी बात के लिए आप अपना मन बनाने से पहले विषय के सभी पहलुओं को देखना पसंद करते हैं । आप को चीजों की तुलना करने और उनकी समरूपता खोजने से प्यार है । आप वाद-विवाद का आनंद लेते हैं , तब भी आप उपर से मित्रवत रहते हुए व्यवहारकुशल हो सकते हैं ।

www.pandit.com

सुन्दरता को आप महत्व देते हैं। बिना मेहनत के और भाग्य से मिली सफलता आपको आकर्षित करती है।शुक्र तुला लग्न का स्वामी है इसलिए शुक्र आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण है ।

सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

स्थिरता , विशेष रूप से रिश्तों में।

सकारात्मक लक्षण

आकर्षक | सरल व्यक्तित्व | रोमानी | आदर्शवादी

नकारात्मक लक्षण

अनिर्णायक | चिंतित | आसानी से प्रभावित | तिकड़मबाज

www.pandit.com

आपकी कुंडली में ग्रहों का विश्लेषण

ज्योतिष के अनुसार सूर्य को सबसे शक्तिशाली ग्रह माना जाता है, यह जीवन का स्रोत है।सूर्य को स्वास्थ्य, जीवन शक्ति, ऊर्जा, शक्ति, पिता, सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, प्रसिद्धि, साहस और व्यक्तिगत शक्ति काकारक कहा जाता है।

आपकी कुंडली में सूर्य ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **धनु**	अंश **04:52:42**	नक्षत्र **मूल - 2**
स्वामी **ग्यारहवाँ भाव**	भाव में **तिसरा भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / बाल**

सूर्य आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में सूर्य तिसरा भाव में एवं धनु राशि में स्थित है।

आप एक बुद्धिमान तथा संतुलित मनुष्य हैं. ज्ञान आप के लिए महत्वपूर्ण है और आप को अर्जित ज्ञान आगे बाँटने और बढ़ाने में आनंद मिलता हैं . आपका मन पूरी तरह से रचनात्मक और आत्मनिर्भर है. आप साहसी, पराक्रमी, चतुर और अधीर व्यक्ति हैं. आप के अंदर इतनी ऊर्जा हैं कि अगर आप कुछ ठान लें तो कोई चाह कर भी आपको नहीं रोक सकता हैं! आप संवाद-संचार, व्यवसाय प्रबंध/संचालन तथा वाणिज्यिक लेनदेन के कामों के लिए उपयुक्त हैं. आप इतने खुले दिमाग वाले व्यक्ति हैं कि सभी के साथ आप की निभ जाती हैं; आपका सामाजिक दायरे बहुत बड़ा हैं. आप को लगता हैं कि आप हमेशा या ज्यादातर सही हैं - आपकी इस धारणा के कारण परिवार जनों या पड़ोसियों के साथ गलतफहमी हो सकती है

> " आप नए विचारों का आदर करते हैं हालांकि वैज्ञानिक प्रमाण के बिना आप किसी प्रत्यय पर जल्द विश्वास नहीं करते

आप अपने भाई बहनो के साथ कोई सामंजस्य नहीं बिठा पाते . आप को घमंड, बौद्धिक वर्चस्व और अनावश्यक अधीरता से बचने की जरूरत है. आप कई बार आक्रामक और अति आत्म विश्वासी हो सकते हैं. आप लोगों पर हावी हो जाते हो . आप को अपने समकक्ष व्यक्तियो, भाइयों या सहयोगियों के हाथों पीड़ित

www.pandit.com

होना पड़ सकता हैं. आप में जीवन शक्ति भरपूर हैं; आप मजबूत शारीरिक गठन और अच्छे स्वास्थ्य के धनी हैं. आप को कई बार छोटी यात्राओं पर जाना पड़ सकता है

आप संवाद – संपर्क, बोलने और लिखने में सक्षम हैं . आप एक आत्म निर्भर व्यक्ति हैं. आप को राज्य और सरकार की ओर से लाभ प्राप्त होगा . अपनी संतान के साथ मिलकर किये गए कार्यों में यश और लाभ प्राप्त होता हैं .आप को चावल या दूध से बने पदार्थों के साथ जरूरतमंदों/मेहमानों की सेवा करनी चाहिए. अपने चरित्र को अनुकुल रखें

सूर्य मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः ॥**

www.pandit.com

चंद्रमा में मन, शक्ति और भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता है। चंद्रमा पानी और प्राकृतिक शक्तियों से जुड़ा हुआ है,यह एक ढुलमुल ग्रह है जो परिवर्तनों से संबंधित है। चंद्रमा भावनाओं, कल्पना, माता, हृदय, स्मृति, नींद, यात्रा, इच्छा, बचपन, बुद्धि से सम्बंधित है। चंद्रमा व्यक्ति कीइच्छाओं और पसंद से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में चन्द्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **वृष**	अंश **29:15:23**	नक्षत्र **मृगशिरा - 2**
स्वामी **दसवां भाव**	भाव में **आठवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / बाल**

चन्द्र आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में चन्द्र आठवाँ भाव में एवं वृष राशि में स्थित है।

आप सबसे अधिक अपनी भावनात्मक तीव्रता के लिए जाने जाते हैं. आप कोई भी कार्य कभी भी अधूरा नहीं करते हैं ; या तो सब कुछ या कुछ भी नहीं है - यही आप का सिद्धांत हैं . आप के मन में दूसरों के प्रति कर्तव्य और दायित्व की दृढ़ भावना है. आप बहुत ज्यादा गंभीर हैं और जीवन के बारे में चिंता करते हैं . आप अंदर से काफी नाजुक हैं. आप जीवन भर सुरक्षा तलाशते रहते हैं जिसके लिए आप कठिन परिश्रम भी करते हैं . भय और चिंता आप को अधिक ईमानदार और दृढ़ संकल्पी बनाते हैं . आत्मविश्वास के बल पर आप वास्तव में सराहनीय ऊंचाइयों तक पहुंच सकते हैं. अस्थिरता आपकी विफलताओं का मुख्य कारण होती हैं . धैर्य और सब्र रखें

> " अधिकतर आप उदासीन और आत्मविश्लेषी रहते हैं

आप बहुत संवेदनशील हैं और गैर-भौतिक वास्तविकता और अनुभावों में गहरी रुचि रखते हैं. आप गुप्त ज्ञान को प्राप्त करने और सभी छिपे पहलुओं की खोज की ओर प्रवृत्त रहते हैं . आप मृत्यु के बाद जीवन से संबंधित मामलों में रुचि रखते हैं . आपका मन अधोलोक में डूबा रहता है . लोगों को आपका व्यवहार

www.pandit.com

बाध्यकारी या जुनूनी लग सकता है. आपका मन हमेशा कुछ गहरे की तलाश में रहता हैं . भावनाओं में तेजी से उतार चढ़ाव आते रहते हैं .सामाजिक और मानवीय गतिविधियों की ओर आपका रुझान है. आप खनन और तेल उद्योग में सफल हो सकते हैं . आप अनुसंधान और अन्वेषक कार्यों के लिए बहुत ही उपयुक्त हैं

आप को वैवाहिक संबंधों से और विरासत से लाभ प्राप्त होगा . वित्तीय मामलों में उतार-चढ़ाव बना रहेगा. मां से संबंध अच्छे नहीं रहेंगें . मां के साथ कुछ गहरे मतभेद हो सकते हैं. परिवार के सदस्यों तथा सहयोगियों के साथ मन मुटाव और झगड़ें होने की संभावना है . किसी के प्रति सशक्त भावनायें उस पर हावी होने की तीव्र इच्छा या जलन पैदा कर सकती हैं.नाग, सांप और अन्य प्रकार के रेंगने वाले जंतुओं से भय बना रहेगा . गैर कानूनी और अवैध कामों से दूर रहें . दूसरों के साथ छल न करें . बुजुर्गों का आशीर्वाद लें

चंद्र मंत्र	**॥ ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः ॥**

www.pandit.com

♂ ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह हिम्मत और तानाशाही से सम्बंधित है। मंगल ग्रह को कार्य और विस्तार का ग्रह माना जाता है। मंगल, शक्ति, साहस, क्रोध, दुश्मन, हिंसा, छोटे भाई, बल, मांसपेशियों और वीरता से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में मंगल ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **धनु**	अंश **15:48:30**	नक्षत्र **पूर्व षाढ़ा - 1**
स्वामी **सातवाँ ,दूसरा भाव**	भाव में **तिसरा भाव**	अस्त/अवस्था **हाँ / युवा**

मंगल आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में मंगल तिसरा भाव में एवं धनु राशि में स्थित है।

आप अधीर और अतिसंवेदनशील व्यक्ति हैं, अपितु आप में मानसिक ऊर्जा की बहुतायत है. आप को अपने विचारों पर पूरा विश्वास है . आप शक्तिशाली, ऊर्जावान और साहसी हैं . आप किसी के साथ किसी भी बात पर समझौता नहीं करते. अपनी प्रशंसा और सराहना कराने के लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं . आप को हर काम में सफलता प्राप्त होगी. आप सचेत, दृढ़ संकल्पी और उत्साही हैं. आपकी विश्लेषणात्मक सोच काफी विकसित है; आवेगी विचारों से बचें . आप हमेशा नवप्रवर्तनशील रहते हैं . आप काम करने के नए तरीकों की खोज में लगे रहते हैं. आप अच्छी शिक्षा पायेंगें; आपको कई भाषाओं का ज्ञान होगा . आप भी गणित में भी निपुण हैं

> " आप बहुत साहसी और आत्मविश्वासी हैं

आप अधीर और अतिसंवेदनशील व्यक्ति हैं, अपितु आप में मानसिक ऊर्जा की बहुतायत है. आप को अपने विचारों पर पूरा विश्वास है . आप बहुत साहसी और आत्मविश्वासी हैं . आप शक्तिशाली, ऊर्जावान और साहसी हैं . आप किसी के साथ किसी भी बात पर समझौता नहीं करते. अपनी प्रशंसा और सराहना कराने के लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं . आप को हर काम में सफलता प्राप्त होगी. आप सचेत, दृढ़ संकल्पी और उत्साही हैं. आपकी विश्लेषणात्मक

www.pandit.com

सोच काफी विकसित है; आवेगी विचारों से बचें . आप हमेशा नवप्रवर्तनशील रहते हैं . आप काम करने के नए तरीकों की खोज में लगे रहते हैं. आप अच्छी शिक्षा पायेंगें; आपको कई भाषाओं का ज्ञान होगा

आप भी गणित में भी निपुण हैं .आपका पारिवारिक और सामाजिक जीवन खुशहाल और आनंददायक रहेगा. आप के अपने भाई बहनों के साथ शांतिपूर्ण संबंध होंगें . आप को तरह तरह प्रकार के भोजन खाना पसंद हैं. हालांकि, आप को अपने आहार पर नियंत्रण रखना होगा . आप रक्त, रक्तचाप, हड्डीयों, तेज बुखार, दांत से संबंधित परेशानियों से पीड़ित हो सकते हैं .कई छोटी यात्राएं होंगीं . आपकी क्रूर और झगड़ालू प्रकृति की वजह से लोग आप से नफरत कर सकते हैं . अति वाद विवाद से बचें .अपनी आवाज पर नियंत्रण रखें. अपनी जेब में चौकोर आकार की चांदी का टुकड़ा रखें

मंगल मंत्र	**॥ ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः ॥**

www.pandit.com

बुध बुद्धि और शिक्षा का ग्रह है, यह भाषण और तर्क से सम्बंधित है और इस प्रकार व्यक्ति के संचार कौशल पर इसका प्रभाव पड़ता है। बुध स्मृति, भाषण, राजनीति, व्यापार और व्यापार, मित्रों, मामा, चाचा, भतीजे, दत्तक पुत्र और तर्क से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में बुध ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **धनु**	अंश **02:51:49**	नक्षत्र **मूल - 1**
स्वामी **नौवां ,बारहवां भाव**	भाव में **तिसरा भाव**	अस्त/अवस्था **हाँ / बाल**

बुध आपकी कुंडली मे लाभप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में बुध तिसरा भाव में एवं धनु राशि में स्थित है।

आप चापलूस, शरारती और रंगीन तबियत के व्यक्ति हैं. आप होशियारी से मीठी बात करते हैं . लेखन तथा वक्तृत्व कला आप में मौजूद है. आप अपने विचारों को धाराप्रवाह व्यक्त कर सकते हैं और हाथ में लिए हुए कार्यों को पूरा करने की क्षमता भी रखते हैं . आप एक हरफनमौला व्यक्ति हैं . आप दिखावे और फ़िजूल खर्ची में विश्वास करते हैं . संभव हैं कि आप एक कपटी और धोखेबाज व्यक्ति हों . आप के कई मित्र होंगे. परन्तु आप की धूर्तता के कारण वे आप का साथ छोड़ देंगें

> आप सतर्क, चतुर, अनुकूलनशील और बहुमुखी विचारक हैं

आप शारीरिक और मानसिक रूप से शक्तिशाली हैं . आप खेलकूद या कसरत-व्यायाम सम्बन्धी पेशे के लिए उपयुक्त हैं. आप गणितीय आकलन में भी निपुण हैं . आप में उत्तम संचार कौशल और अच्छा शिष्टाचार है. इन सभी अच्छे गुणों के कारण आप एक अच्छे कूटनीतिज्ञ अथवा राजनयिक बन सकते हैं . आप एक अच्छे शिक्षक अथवा कंप्यूटर विशेषज्ञ, सफल एवं प्रसिद्ध लेखक, कलाकार, अभिनेता, निर्देशक या टी वी एंकर भी बन सकते हैं. भाई बहनों के साथ प्यार

www.pandit.com

और मैत्री का रिश्ता होगा. आप उनके बुरे समय में उनकी काफी सहायता करेंगें और उन्हें प्रोत्साहित करेंगे . आप के पिता को आपसे अभूतपूर्व समर्थन प्राप्त होगा; आप अपने पिता के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं अथवा अपने पारिवारिक व्यवसाय को आगे बढ़ा सकते हैं

आप को रक्त विकार, मधुमेह, बहरापन या पेट से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है . आप पित्त से सम्बंधित बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं . आपको व्यर्थ की यात्रा करनी पड़ सकती है. लॉटरी, जुआ और सट्टेबाजी में धन की हानि के संकेत हैं . आप पर घूसखोरी के गंभीर आरोप लगाये जा सकते हैं . मशीन, स्पेयर पार्ट्स, लकड़ी और लोहे के काम में हाथ न डालें . निःसंतान व्यक्ति से भूमि न खरीदें . आप का अनैतिक / अवैध कामों के प्रति झुकाव हो सकता है; ऐसे में आप अपनी संपत्ति बनाने और धारण करने से वंचित रह सकते हैं.

बुध मंत्र	**॥ ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ॥**

www.pandit.com

बृहस्पति को मंत्रि ग्रह माना जाता है जो ज्ञान, खुशी और अच्छे भाग्य से संबंधित है। बृहस्पति धन, ज्ञान, गुरु, पति, पुत्र, नैतिक मूल्यों, शिक्षा, दादा दादी और शाही सम्मान का कारक है। यह धार्मिक धारणा, भक्ति और लोगो के विश्वास को दर्शाता करता है।

आपकी कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **मीन**	अंश **01:12:39**	नक्षत्र **पूर्व भाद्रपद - 4**
स्वामी **तिसरा ,छठा भाव**	भाव में **छठा भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / मृत**

गुरु आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में गुरु छठा भाव में एवं मीन राशि में स्थित है।

आप का दिमाग बहुत तेज है. आप आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रकृति के व्यक्ति हैं. आप अपनी वाक्शक्ति द्वारा दूसरों को अपनी बात के लिए राज़ी करने में समर्थ हैं. शत्रु किसी भी तरह से आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकते हैं . आप सही अर्थों में एक संतुष्ट जीवन जीयेंगें .आप में गज़ब की लेखन की शक्ति होगी और गणित, भाषा, व्याकरण, कानून, ज्योतिष जैसे विषयों में आप निपुण हो सकते हैं . सट्टेबाजी, रेसिंग, सूखे मेवे, सुवर्ण से संबंधित उद्योगों में आपको लाभ हो सकता है . आप सरकारी विभाग या अन्य प्रशासनीय सेवाओं में नौकरी प्राप्त कर सकते हैं

> " आप अत्यंत सहनशील हैं और राज़ बनाए रखने में सक्षम हैं

आप एक सहायक, भरोसेमंद और निष्ठावान कार्यकर्ता हैं . आप एक असाधारण कार्य नैतिकता वाले योग्य और मेहनती श्रमजीवी हैं . आप लंबे समय के लिए बेरोजगार नहीं रह सकते . आप अपने साथी कार्यकर्ताओं के बीच सहयोग और सद्भावना प्रेरित करते हैं . कार्यस्थल पर आप एक सम्मानित व्यक्ति होंगें .आप के प्रेम संबंध असफल रहेंगें . परन्तु वैवाहिक और पारिवारिक जीवन का आनंद आप अवश्य उठा पायेंगें

www.pandit.com

आपकी पत्नी सुशिक्षित और कामकाजी स्त्री होंगीं .साधारणतया आप का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा . अति भोग विलास, गलत खान-पान और अनुचित आदतों के कारण आप को बारंबार पेट सम्बंधित समस्याएं हो सकती हैं. आप दमा, रक्त सम्बंधित रोग, हर्निया, मांसपेशियों में दुर्बलता और अन्य समस्याओं से पीड़ित हो सकते है. अत्यंत परिश्रम करने और अधिक खाने-पीने से बचें .सूरज को जल चढ़ाएं . अपने शरीर पर सोना पहनें और कभी भी सोना न बेचें

गुरु मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः ॥**

www.pandit.com

वीनस कामुक सुख और कामुक आवेगों से सम्बंधित है। चमक और जीवन शक्ति का ग्रह होने के नाते भौतिकवाद और मांस के आनंद को दर्शाता है। वीनस को यौन इच्छाओं (काम), कामेच्छा, पत्नी का महत्व का कारक माना जाता है। यह जुनून, विवाह, लक्जरी लेख, गहने, वाहन, आराम और सुंदरता से संबंधित है।

आपकी कुंडली में शुक्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **तुला**	अंश **19:31:12**	नक्षत्र **स्वाति - 4**
स्वामी **आठवाँ ,पहला भाव**	भाव में **पहला भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / वृद्ध**

शुक्र आपकी कुंडली मे लाभप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में शुक्र पहला भाव में एवं तुला राशि में स्थित है।

आप शारीरिक रूप से आकर्षक हैं . आपका चुंबकीय व्यक्तित्व सौम्य और करिश्माई आभामंडल से परिपूर्ण है . आप दिल के बहुत साफ हैं . सुन्दर होने के साथ आप स्नेहशील और जोशीले भी हैं . आप फैशन परस्त हैं और सुरुचिपूर्ण ढंग के पोशाक और अलंकार पहनना पसंद करते हैं . आप हर उस चीज़ से सहसम्बद्ध हैं जो आपसे या आपकी छवि से जुडी है . आप स्वभाव से मिलनसार और शिष्ट हैं . आप काफी व्यवहारकुशल हैं और झगड़ों से दूर ही रहना पसंद करते हैं

> " आप पहली झलक में ही लोगों को मोह लेते हैं

आप को कविता, चित्रकला, इंटीरियर डिजाइनिंग, फैशन डिजाइनिंग और साहित्य में विशेष रुचि हो सकती है . आप रेडीमेड कपड़ों, विदेशी ब्रांडेड वस्तुओं, घर की सजावट के सामान, आदि से संबंधित व्यवसाय कर सकते हैं .आप विलासिता और ऐश्वर्य के शौकीन हैं . व्यक्तिगत संबंधों में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करना आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है . आप कभी कभी स्वार्थी और आत्म-केन्द्रित हो सकते हैं . आप गरिष्ट और स्वादिष्ट भोजन खाना पसंद करते हैं

www.pandit.com

और पर्याप्त व्यायाम न करने के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है . आप मूत्र संक्रमण, सिर दर्द, आंख या त्वचा से संबंधित समस्याओं से पीड़ित हो सकते हैं.आपके प्रेम सम्बन्ध सफल रहेंगें

आप का वैवाहिक जीवन सुखद और सम्पन्न होगा . विवाहेतर सम्बन्ध अथवा व्यभिचार आपकी पारिवारिक शांति के अलावा आपकी आर्थिक स्तिथि पर भी बुरा प्रभाव डाल सकते हैं . संतान उत्पत्ति में समस्याएं हो सकती हैं. कोई भी नए कार्य की शुरुआत करने से पहले किसी दुसरे अनुभवी व्यक्ति की सलाह जरूर लें. २५ वर्ष की आयु में विवाह न करें . अपने प्रयोजन या मतलब के लिए लोगों का फायदा उठाने से बचें . अपने आस पास सफ़ेद फूलों वाले पौधें लगवाएं

शुक्र मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ॥**

www.pandit.com

शनि एक धीमी गति का ग्रह है। इसे न्याय, तर्क और विनाशकारी शक्तियों का ग्रह कहा जाता है। यह आपदाओं और मृत्यु से संबंधित है। शनि को एक शिक्षक के रूप में भी माना जाता है। शनि लंबी उम्र से सम्बंधित है। यह देरी, अवरोध, दु: ख, नुकसान, चोरी, बुढ़ापे, दु: ख, प्रतिकूलता और आजादी सेसम्बंधित है।

आपकी कुंडली में शनि ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **कन्या**	अंश **22:03:16**	नक्षत्र **हस्त - 4**
स्वामी **चौथा ,पाँचवा भाव**	भाव में **बारहवां भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / कुमार**

शनि आपकी कुंडली मे योगकारक है

आपके जन्मपत्रिका में शनि बारहवां भाव में एवं कन्या राशि में स्थित है।

आप एक आकर्षक और मासूम दिखने वाले व्यक्ति हैं . आप की आँखों और मुस्कान में चुंबकीय शक्ति है . आप में आंतरिक अनुशासन और संवेदनशीलता को विकसित करने की प्रबल क्षमता है . आप किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं . साथ ही भय, संदेह और विश्वास की कमी भी हो सकती है . आप किसी विशेष कारण के बिना उदास और परेशान हो जाते हैं . अवचेतन मन में भय दबाये रखने के कारण दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती है . आप कभी कभी तुनुकमिज़ाज हो जाते हैं . आप अतिव्ययी हैं और इसलिए साधनों के अभाव से घिरे रहते हैं

> " आप बहुत विनम्र हैं

आप पूरा जीवन कठिनाइयों का सामना करते और कड़ी मेहनत करते बितायेंगें .आप बुद्धिमान और जानकार व्यक्ति हैं . आपका करियर किसी तरह से मानव जाति की सेवा से जुड़ा होगा . आप एकांत प्रेमी हैं . आपको पर्दे के पीछे काम करना पसंद हैं; आप ऐसे व्यवसाय में शामिल हो सकते हैं, जहां आप आम जनता के साथ संपर्क में न आते हों . आप चिकित्सा उपकरण, भवन निर्माण, निर्माण-कार्य की सामग्री और कृषि उपकरणों के निर्माण से संबंधित काम कर

www.pandit.com

सकते हैं . आप जेल या अस्पताल में भी कार्यरत हो सकते हैं .आप को परिवार से जुदाई झेलनी पड़ सकती है

आपकी अपनी पत्नी और अपने परिवार के साथ कुछ मतभेद हो सकते हैं; पर समय बीतने के साथ सब ठीक हो जाएगा. आपके बच्चे ही आपकी संपत्ति हैं . आपके बच्चें बुद्धिमान होंगें और आपका सम्मान करेंगे. आप का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, लेकिन आप अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह रहते हैं. आप लक़वा, बवासीर और हर्निया, रीढ़ की हड्डी में समस्या, पेट की समस्याओं, आदि से पीड़ित हो सकते हैं . जीवन के उत्तरार्ध में स्वास्थ्य की परेशानियों के कारण आपको कई बार अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत पड़ सकती हैं . हमेशा सोने की चेन पहनें रखें . भोजन, परस्त्री और सेक्स की लालसा न रखें

शनि मंत्र	**॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ॥**

www.pandit.com

अजीब और अपरंपरागत ग्रह होने के कारण राहु भौतिकवाद से सम्बंधित है और कठोर वाणी, कमी और इच्छा से सम्बंधित है। राहु को ट्रान्सेंडेंटलिज्म का ग्रह कहा जाता है। यह विदेशी भूमि और विदेशी यात्रा से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में राहु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **धनु**	अंश **08:52:49**	नक्षत्र **मूल - 3**
स्वामी **बारहवां भाव**	भाव में **तिसरा भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / कुमार**

आपके जन्मपत्रिका में राहु तिसरा भाव में एवं धनु राशि में स्थित है।

आप सिंह के समान बहादुर और साहसी हैं . आप शिक्षित, प्रसिद्ध, धनवान हैं और बड़े प्रतिष्ठित लोगों से जुड़े हुए हैं . आप एक सुखद और संतुष्ट जीवन जीयेंगें . आप के अपने आसपास के लोगों के साथ अच्छे संबंध होंगें . आप प्रकृति से बहुत अधिक आत्मविश्वासी और निडर हैं. आप का मन सावधान, उत्साही और कल्पनाशील है; जिसमें से बहुतायत में विचार प्रवाह रहता होता है . आप को स्वयं के प्रयासों के माध्यम से सफलता मिलेगी . कभी कभी अपनी गहरी भावनाओं को व्यक्त करना आप के लिए मुश्किल हो जाता है . आप प्रबंधन में कुशल हैं . आप दूसरों से काम लेने की क्षमता रखते हैं

> " आप अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगें

व्यावसायिक तौर पर आप बहुत सफल होंगें . आप अपने साथियों और सहयोगियों पर सशक्त प्रभाव डालते हैं . आप अभिव्यक्तिशील कार्यों और भूमिकाओं में लिए सबसे अधिक उपयुक्त हैं . आप अभिनय और अन्य कलात्मक गतिविधियों में भी संलग्न हो सकते हैं . आप ट्रैवल एजेंसी, वाहनों के कारोबार, संगीत वाद्ययंत्र, प्रकाशन, आदि के व्यवसाय द्वारा अच्छी आय अर्जित कर सकते हैं . आप बौद्धिक गतिविधियों में, विशेष रूप से साहित्य, कला, इतिहास या भूगोल में, सफलता हासिल करेंगें .२७ वर्ष की आयु से पहले शादी न करें, अन्यथा आप का विवाहित जीवन सुखी नहीं होगा . संतान उत्पत्ति में परेशानी हो सकती है . संभव है कि आप अपनी पत्नी के साथ कभी संतुष्ट नहीं हो पायेंगें

आपको परिवार का समर्थन कम ही मिलेगा . आप और आपके भाई-बहनों के बीच असहमति हो सकती है .आप एक लंबे समय तक एक ही स्थान पर नहीं रह सकते; आप अवश्य विदेश यात्रा करेंगे . आप को भ्रमण करने की लालसा है; आप नित नए क्षितिज खोजते रहते हैं .आप खाँसी और रक्त शर्करा के विकारों से

www.pandit.com

परेशान हो सकते हैं . आपको दमा, टी बी, कान की समस्याएं भी हो सकती हैं . हर रोज त्रिफला का चूर्ण या बटी लें .घर में हाथी दांत या हाथीदन्त से बनी चीजें कभी न रखें . चांदी पहनें

राहु मंत्र	**॥ ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः ॥**

www.pandit.com

केतु मोक्ष, पागलपन का ग्रह है। यह आध्यात्मिकता से सम्बंधित है। केतु रहस्यमय, भ्रामक, गुप्त और पेचीदा ग्रह है। केतु दर्द, रहस्य, गुप्त विज्ञान, उदासीनता, दर्शन, अलगाव और कारावास का प्रतीक है।

आपकी कुंडली में केतु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
मिथुन	08:52:49	आर्द्रा - 1
स्वामी	**भाव में**	**अस्त/अवस्था**
छठा भाव	नौवां भाव	नहीं / कुमार

आपके जन्मपत्रिका में केतु नौवां भाव में एवं मिथुन राशि में स्थित है।

आप एक मधुर प्रकृत्ति वाले बहुत ही आकर्षक व्यक्ति हैं . आप स्वभाव से बहुत ही सैद्धांतिक और आशावादी हैं . आप सुशिक्षित और विद्वान हैं . आप की दूरदर्शिता विलक्षण है; जीवन की समस्याओं के प्रति आपका अभिनव दृष्टिकोण है . आप जीवन में केवल कड़ी मेहनत के आधार पर ही सफलता पायेंगें . कभी कभी आप चिड़चिड़े और अभिमानी हो जाते हैं . आप गुस्सैल हो सकते हैं, और छोटी छोटी बातों पर परेशान हो जाते हैं . आप ठाट-बाट और तड़क-भड़क के शौकीन हो सकते हैं . आप अभिमानी और हठी हो सकते हैं

> " आप आत्म विश्वासी हैं; इसलिए भविष्य के बारे में चिंता नहीं करतें

आप अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा विदेश में व्यतीत करेंगें . कैरियर के संबंध में आप विदेश जा सकते हैं . आप एक आकर्षक उपदेशक या सलाहकार बन सकते हैं . आप विशेष रूप से कला और लेखन के क्षेत्र में और सामाजिक सेवाओं में चमकेंगें . आप दूरसंचार या मीडिया प्रसारण, योजनाकार, विस्तार आयोजक, प्रशिक्षक, अनुवादक, आदि व्यवसायों में बहुत अच्छा काम कर सकते हैं .आप अपने माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार कर सकते हैं . आप का परिवार रूढ़िवादी विचारों वाला होगा; आप अपने परिवार के विश्वास और आस्था के खिलाफ विद्रोह हो सकते हैं . आप के अपने पिता के साथ मतभेद हो सकते हैं और आप उनसे दूर रहना पसंद करते हैं . वैवाहिक जीवन संतोषजनक होगा

आप का अंतरजातीय विवाह हो सकता है . आपकी पत्नी एक बहुत अच्छी गृहिणी होंगीं . आपकी संतान होनहार होगी और आप के लिए नई पहचान बनाएगी .आपके पिता का स्वास्थ्य ख़राब रह सकता है . आप पीठ दर्द, मूत्राशय और पैर सम्बंधित समस्याओं से पीड़ित हो सकते हैं . आप शराब के आदी हो सकते हैं

www.pandit.com

.घर में कहीं सोने का एक आयताकार टुकड़ा स्थापित करें . पिता, दादा के साथ रहें व उनकी सेवा करें . हमेशा अपने ससुर का सम्मान करें

केतु मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः॥**

www.pandit.com

भ्रामरी योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	2-6-2021 20:9
समाप्ति तिथि:	2-6-2025 20:9

भ्रामरी दशा योगिनी दशा की चौथी दशा है। इसकी अवधि चार वर्षो की है तथा इसके स्वामी "मंगल" है। वैसे तो भ्रामरी दशा को अशुभ दशा माना गया है किन्तु से जरुरी नहीं है कि इस पूरे चार साल के अवधि में ये केवल अशुभ परिणाम ही देता है। क्योंकि प्रत्येक के अंतर्गत अन्य योगिनी की अन्तर्दशा भी आती है और जब शुभ योगिनी की दशा आयेगी अशुभ योगिनी की अंतर्दशा में तब कहीं न कहीं मिश्रित फल प्राप्त होगा। भ्रामरी जैसा की इस नाम से "भ्रमण" का अर्थ प्रतीत होता है, ठीक उसी तरह इस अवधि के दौरान आप देश-विदेश की यात्रा करेंगे। आपको विदेश यात्रा के अवसर तो प्राप्त होंगे किन्तु आपको इस भ्रमण से कई बार कष्ट भी प्राप्त हो सकता है। आपको यात्रा के अवसर तो प्राप्त होंगे किन्तु कोई भी फैसला लेने से पहले आपको सोच विचार कर लेना चाहिए। आपकी इन यात्राओं के परिणाम हर बार शुभ हो ऐसा जरुरी नहीं है, आपको वित्तीय नुकसान का भी सामना करना पड़ सकता है।

मंगल के प्रभाव की वजह से आपके जीवन में थोड़ी बहुत परेशानी लगी रहेगी। आपको आपके रोजगार के क्षेत्र में, आपके व्यक्तिगत जीवन में भी कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप अपनी नौकरी बदलते है तो ऐसी संभावना है कि आपको अपने घर से दूर रहना पड़ सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में भी परेशानी आ सकती है, आपके जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद की वजह से आपका तलाक हो सकता है। जीवन में लगातार परेशानियों बनी रहती है जिसकी वजह से आपका स्वभाव चिड़चिड़ा और झगड़ालू हो सकता है। अपने व्यक्तिगत तौर पर हो रहे नुकसान की वजह से आप अपना धैर्य खो सकते है इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी कार्य को करने से पहले अपने मन को शांत रखें और धैर्य के साथ काम लें। यदि आप सच्चे मन और लगन के साथ काम करते है तो किसी भी परेशानी से बाहर आ सकते हैं।

उपाय

- आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ का फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी और आंवला अपने पास रख सकते हैं। इनमें से एक या अधिक वस्तु को अपने पास रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इन वस्तुओं से भगवान सूर्य प्रसन्न होते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ-साथ आक का भी प्रयोग करना चाहिए। धान्य पिंगला दशा के दौरान उपाय करने से आपको बहुत लाभ प्राप्त होगा।

- भ्रामरी महादशा के दौरान 3 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक सिद्ध होगा।

भ्रामरी - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	2-6-2021 20:9
समाप्ति तिथि:	12-11-2021 4:9

भ्रामरी योगिनी की पहली अंतर्दशा "भ्रामरी अन्तर्दशा" है। इस अन्तर्दशा की अवधि लगभग 6 महीने और 19 दिनों की होती है। भ्रामरी अंतर्दशा के

www.pandit.com

स्वामी ''मंगल'' को माना गया है। मंगल के प्रभाव की वजह से आपको इस अवधि के दौरान अनेक परेशानियों से गुजरना पड़ सकता है।

मंगल का प्रभाव आपके व्यक्तिगत संबंध पर भी पड़ सकता है। आपका आपके रिश्तेदार और प्रियजनों के साथ झगड़ा हो सकता है, आपके मन में भय उत्पन्न हो सकता है। आपका मोह आपके लिए पीड़ा का कारण बन सकता है, किसी भी चीज के प्रति अत्यधिक मोह ही आपको उस चीज से दूर ले जायेगा। आपके प्रियजन आपके खिलाफ षड़यंत्र कर सकते है, आपके खिलाफ खड़े हो सकते है इसलिए आपको ऐसे लोगों से सावधान रहने की जरूरत है। यदि आपका आपके परिवार के साथ कोई भी मतभेद चल रहा है तो आपको इस मामले का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इस मतभेद का दूसरे लोग फयदा उठा सकते है जिसकी वजह से आपका और ज्यादा नुकसान होने की संभावना है। सबसे ज्यादा आपके इस हालात का फयदा आपके शत्रु उठा सकते है। आपके शत्रु इस पूरी अवधि में आपकी परेशानी का कारण बना हुआ रह सकता है।

आपको इस अवधि में अपनी सेहत का भी ध्यान रखना चाहिए, मिलावटी या बाहर का भोजन कर के आप बीमार हो सकते है। आपको स्वस्थ और स्वच्छतापूर्ण अच्छे से पका हुआ भोजन करना चाहिए। इस अवधि के दौरान आपके मन में भय, चिंता घर कर सकता है जिसकी वजह से आप तनाव महसूस कर सकते है, किन्तु आपको परिस्थिति से परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। आप अपने दृढ मन से किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते है इसलिए आपको सलाह दी जाती है कि हर परिस्थिति में मन को शांत रखे और अपनी सेहत का भी ख्याल रखें।

उपाय

- मंगल ग्रह की स्थिति को मजबूत करने के लिए आपको बेल की लकड़ी, पत्ते और फूल, खैर के पेड़ की लकड़ी, लाल फूल, महरी, साबुत लाल मिर्च, काली मिर्च और हरड़ का उपयोग कर हवन करना चाहिए। अपने घर में इन मुख्य सामग्री के साथ आप पीपल का भी उपयोग कर सकते हैं। मंगला भ्रामरी दशा के दौरान उसकी स्थिति में सुधार करने के लिए इन पेड़ों की टहनी में रहने वाले घरों का उपयोग कर सकते हैं। आपके लिए ये उपाय लाभकारी सिद्ध होगा।

- भ्रामरी महादशा की स्थिति को मजबूत करने के लिए 3 मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

भ्रामरी - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	12-11-2021 4:9
समाप्ति तिथि:	3-6-2022 2:9

भ्रामरी योगिनी की दूसरी अंतर्दशा ''भद्रिका अन्तर्दशा'' है। इसकी अवधि लगभग 8 महीने तक चलती है,तथा इसके स्वामी ''बुध'' को माना गया है। इस अवधि में आपका समय न तो बहुत अधिक शुभ होगा और न ही बहुत अधिक अशुभ होगा, ये अवधि आपको मिश्रित परिणाम देगा। ये अवधि आपके लिए विदेश यात्रा के अवसर लेकर आएगा, आप अपने बेहतर भविष्य के लिए विदेश में बस भी सकते है। आपको दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताने का मौका मिलेगा। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते है तो आपके नामांकन के लिए ये अवधि सही साबित होगी। आपको रोजगार के क्षेत्र में भी अच्छे अवसर प्राप्त होंगे, आपकी वर्षो की मेहनत को आपके वरिष्ठ सहकर्मी या सरकारी कर्मचारी की मदद से पहचान मिल सकती है। आपकी नौकरी में पदोन्नति हो सकती है या आपको आपकी मेहनत के लिए पुरस्कार मिल सकता है। आपके कार्य के क्षेत्र में आपको अच्छी पहचान मिल सकती है, उस क्षेत्र में आपका भाग्य अच्छा हो सकता है। इस अवधि में अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें क्योंकि इस दौरान आपकी सेहत खराब हो सकती है। आपको त्वचा से संबंधित कुछ समस्या हो सकती है, चेहरे पर फोड़े हो सकते है जिसको बिना चिकित्सा के मदद के ठीक करना थोड़ा मुश्किल हो सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि अपनी सेहत को लेकर लापरवाह न हो, अपना और अपनी सेहत का ध्यान रखना।

www.pandit.com

भ्रामरी - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	3-6-2022 2:9
समाप्ति तिथि:	1-2-2023 14:9

भ्रामरी योगिनी की तीसरी अन्तर्दशा "उल्का अन्तर्दशा" है। इस अन्तर्दशा की अवधि 9 महीने 11 दिनों की होती है, तथा इसके स्वामी "शनि" को माना गया है। शनि को हमेशा से कठोर स्वभाव वाला माना गया है इसलिए इस अवधि को भी चुनौतियों से भरा हुआ माना जाता है। इस अन्तर्दशा में भद्रिका दशा की मुश्किलें भी जारी रहने की संभावना है जिसकी वजह से आप और ज्यादा परेशान हो सकते है। इस अवधि के दौरान आपको अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आपको सेहत संबंधी कुछ कठिनाई हो सकती है। आपको बुखार, शरीर में दर्द और रक्त संबंधी बीमारियां हो सकती हैं। आपको अपनी बिमारियों के ईलाज के लिए कुछ कोशिश करनी चाहिए ताकि आप वक्त रहते ठीक हो पाये।

शनि की दृष्टि की वजह से आपका और आपके रिश्तेदारों के बीच कुछ मतभेद हो सकती है। आपके प्रति उनकी सोच अच्छी नहीं होगी जो आपको परेशान कर सकती है किन्तु आपको ये सलाह दी जाती है कि आप इन बातों से परेशान न हो और कोई भी फैसला लेते समय मन को शांत रखें। आपके वैवाहिक जीवन में भी समस्या आ सकती है, आपके और आपके जीवनसाथी के बीच मतभेद हो सकता है साथ ही आपके बच्चों को भी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है जैसे उनका परीक्षा में ख़राब नतीजा, अपने मन के हिसाब के विद्यालय में नामांकन न होने से दुखी होना इत्यादि। आपको अपने बच्चों और अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि इस अन्तर्दशा के दौरान उनको स्वास्थ्य संबंधी कुछ परेशानी हो सकती है। आपके जीवन में इतनी सारी परेशानियों की वजह से आप तनाव में आ सकते है, इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने सभी कार्य धैर्य के साथ करें और रिश्ते निभाते समय अपने गुस्से पर नियंत्रण रखें।

उपाय

- शनि की स्थिति को मजबूत करने के लिए कस्तूरी, सेमल के पेड़ की टहनियाँ, बेल के पत्ते या फल, और कैक्टस और गुलाब जैसे कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी के पेड़ लकड़ी या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी उपयोग आप हवन में कर सकते हैं। पिंगला तथा उल्का दशा के दौरान इन उपायों के करने आपको लाभ प्राप्त होगा।

- भ्रामरी महादशा की स्थिति को मजबूत करने के लिए 3 मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

भ्रामरी - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	1-2-2023 14:9
समाप्ति तिथि:	12-11-2023 16:9

भ्रामरी योगिनी की चौथी अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 10 महीने और 18 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना जाता है। ये अंतर्दशा आपके लिए अनुकूल माना जाता है। शुक्र की कृपा हमेशा अच्छा प्रभाव छोड़ती है और इस अंतर्दशा पर शुक्र का प्रभाव होने से ये आपको पहले से चल रही परेशानी से राहत दिला सकती है। आपको अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्या से भी छुटकारा मिल सकता है या आपकी बीमारी का ईलाज मिल सकता है। ये अवधि आपके ज्ञान हासिल करने के लिए भी अनुकूल है। आपको अपनी आगे की पढाई करने का और अपने कौशल को आगे बढ़ाने का मौका मिलेगा। शुक्र का शासन आपकी मनोकामना को पूरा करने के अवसर लेकर आ सकता है, इसलिए आपको अगर कुछ करना है तो ये समय आपके मनोकामना को पूरा करने का सही अवसर है, इस समय आपको आपके सपनों को पूरा करने के संसाधन भी

www.pandit.com

मिलने की संभावना है।

आर्थिक रूप से भी आपको लाभ की प्राप्ति होगी, व्यापार में किये निवेश से लाभ प्राप्त होगा। नौकरी में आय वृद्धि या पदोन्नति होने की संभावना है। आपको नयी जगह से भी रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आपको बस इस अच्छे समय का सही तरीके से उपयोग करना है ताकि आप इस अवधि से ज्यादा से ज्यादा अवसर का लाभ ले पायें।

भ्रामरी - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	12-11-2023 16:9
समाप्ति तिथि:	2-10-2024 8:9

भ्रामरी योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इस अंतर्दशा की अवधि लगभग 1 महीने और 12 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "राहु" को माना गया है। राहु के प्रभाव की वजह से इस अन्तर्दशा के प्रभाव को प्रतिकूल प्रभाव माना जाता है।

इस अवधि के दौरान आपका नाम और आपकी प्रतिष्ठा खतरे में आ सकती है। आपको अपने काम में एकाग्र होने में मुश्किल का सामना करना पड़ सकता है जिसकी वजह से आपके वरिष्ठ अधिकारी का आपसे विश्वास कम हो सकता है और आपकी नौकरी जांच के दायरे में आ सकती है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप जो भी कर रहें है उसकी जानकारी अपने वरिष्ठ अधिकारी को जरूर दें और कोई भी बड़ा निर्णय लेने से पहले अच्छे से विचार करें या फिर इस समय में कोई बड़ा निर्णय लेने से बचें। कोई भी अनैतिक कार्य करने से बचें अन्यथा आप पर चोरी का इल्जाम लग सकता है। ये अवधि आपको अनावश्यक यात्राओं के योग भी बनाता है किन्तु आपको कोई भी ऐसे कार्य से बचना चाहिए जो आपके समय की बर्बादी करे।

इस अवधि के दौरान आपको कोई बुरी खबर मिलने की भी संभावना है, इसलिए खुद के मन को मजबूत बना के रखें। आपके स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ये समय आपके लिए शुभ नहीं है। आपको अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए और नियमित तौर पर अपने स्वास्थ्य की जांच करवानी चाहिए। आवश्यक होने पर डॉक्टर की सलाह लेने से भी न चूकें।

उपाय

- राहु की स्थिति को मजबूत करने के लिए मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजों का उपयोग करना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हवन में हरी दूर्वा घास का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला संकटा दशा के दौरान उपाय करने से आपको इसके कई लाभ प्राप्त होगा।

- भ्रामरी महादशा की स्थिति को मजबूत करने के लिए 3 मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

भ्रामरी - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	2-10-2024 8:9
समाप्ति तिथि:	11-11-2024 22:9

www.pandit.com

भ्रामरी योगिनी की छठी अंतर्दशा "मंगला अंतर्दशा" है। इस अंतर्दशा की अवधि लगभग 2 महीने और 19 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "चन्द्रमा" को माना जाता है। चूँकि चन्द्रमा का प्रभाव शुभ होता है इसलिए इस अवधि के प्रभाव को भी अनुकूल माना गया है। इस अवधि में आपके करियर आपके व्यक्तिगत जीवन तथा रिश्तेदारों सभी मामलों में आपका बेहतर होगा। जो आप इतने वर्षों अपने रोजगार में मेहनत कर रहे है, आपकी उस कड़ी मेहनत को आपके वरिष्ठों की मदद से इस अवधि में पहचान मिल सकती है। यदि आप किसी सरकारी कार्य में लगे हुए है तो आपको उस कार्य में भी सफलता मिल सकती है। आपको आपके मनचाहे सरकारी प्रोजेक्ट में काम मिल सकता है जो आगे चलकर आपके लिए फयदेमंद हो सकता है। ये अन्तर्दशा आपको विदेश यात्रा या विदेश में कार्य करने का मौका भी दे सकती है। यदि आपको ऐसे किसी भी अवसर की प्राप्ति होती है तो उसका उपयोग करें ये अवसर आपके भविष्य के लिए बेहतर हो सकता है। यदि आप विदेश की यात्रा करने की बजाय किसी बेहतर स्थान पर बसने के विषय में भी सोच सकते हैं। यदि आर्थिक क्षेत्र की बात करें तो इस क्षेत्र में भी आपको काफी लाभ प्राप्त होंगे। आपको आय के विभिन्न और बेहतर श्रोत प्राप्त होंगे और आप अपने करियर को बेहतर बनाने के लिए अपनी आय से कुछ बचत भी कर सकते हैं। कुल मिलाकर ये समय आपके लिए काफी शुभ होगा बस जरूरत है आपको मिल रहे हर अवसर का लाभ उठाने की, उसके बाद आपका जीवन इस अवधि में जरूर बेहतर हो जायेगा।

भ्रामरी - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	11-11-2024 22:9
समाप्ति तिथि:	1-2-2025 2:9

भ्रामरी योगिनी की सातवीं अंतर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। ये अवधि लगभग 4 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना जाता है। सूर्य द्वारा शासित ये अवधि प्रतिकूल प्रभाव देने में सक्षम होता है। ज्यादातर मामलों में देखा जाता है कि सूर्य और मंगल कभी अधिक फलदायी नहीं होते। इस अवधि के दौरान आपको अपने स्वास्थ्य का अतिरिक्त ध्यान रखने की जरूरत है क्योंकि आपको अपनी सेहत की समस्या की वजह से लम्बी अवधि तक दवाई खानी पड़ सकती है। आपको अपने स्वास्थ्य के अलावा अपने माता-पिता तथा अपने बच्चों के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि सूर्य की दृष्टि उनपर भी हो सकती है। आपके माता-पिता के जीवन में कुछ समस्या हो सकती है जिसकी वजह से आप भी तनाव में आ सकते हैं।

आपको कोई भी कार्य करते हुए सावधानी बरतनी चाहिए और अपने काम पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान दें ताकि आपसे कोई गलती न हो जाये। कोई भी जोखिम भरे या अनैतिक फैसले लेने से पहले आपको विचार कर लेना चाहिए क्योंकि जल्दबाज़ी में लिए गये फैसले गलत हो सकते है। आपके द्वारा लिया गया एक गलत फैसला आपकी इज्जत और प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिला सकता है। आपको अपने दफ्तर में भी अधिकारियों के साथ भी अच्छा बर्ताव करना चाहिए नहीं तो आपका ये स्वभाव भी आपको जोखिम में डाल सकता है।

उपाय

- आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ का फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी और आंवला अपने पास रख सकते हैं। इनमें से एक या अधिक वस्तु को अपने पास रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इन वस्तुओं से भगवान सूर्य प्रसन्न होते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ-साथ आक का भी प्रयोग करना चाहिए। धान्य पिंगला दशा के दौरान उपाय करने से आपको बहुत लाभ प्राप्त होगा।

- भ्रामरी महादशा की स्थिति को मजबूत करने के लिए 3 मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

www.pandit.com

भ्रामरी - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	1-2-2025 2:9
समाप्ति तिथि:	2-6-2025 20:9

भ्रामरी योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा "धान्या अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 5 महीने और 11 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" है। इस अंतर्दशा का प्रभाव मुख्य रूप से अनुकूल अवधि माना जाता है। यह एक सकारात्मक और भाग्यशाली अवधि है। इस अवधि में आपको अपने करियर को बनाने में तथा आय वृद्धि के भरपूर अवसर प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप किसी व्यवसाय में निवेश करना चाहते है तो भी ये समय आपके लिए अनुकूल समय होगा। आपको आपके व्यवसाय में उच्च मूल्य वाले ग्राहक मिलेंगे जो आपके व्यापार को आगे बढ़ाने तथा लाभ कमाने में आपकी मदद करेंगे। आप अपने कार्य क्षमता से प्रभावशाली लोगों या वरिष्ठ सरकारी अधिकारी से संपर्क स्थापित करने में सफल हो सकते हैं।

ये अवधि आपके जीवन में आराम और सुख-सुविधा लेकर आयेगा। अभी तक यदि आप कार नहीं खरीद पाये है तो इस अवधि के दौरान आपको ये मौका भी मिल जायेगा जब आप एक कार खरीदने की क्षमता रखेंगे। आप अपने घर तथा कार्यालय को आरामदायक और सुन्दर बनाने के लिए उसे बीच-बीच में सजाते रहते है ताकि उसकी सुंदरता बनी रहे। इस अवधि के दौरान आपको अपने शत्रुओं से छुटकारा मिल सकता है। आपके शत्रुओं द्वारा आपके मार्ग को रोकने और बढ़ा उत्पन्न करने की हर कोशिश इस अवधि में समाप्त हो जायेगी, उनके कोई भी नकारात्मक प्रयास सफल हो होंगे। आपको बीएस ये सलाह दी जाती है कि आपको जो अवसर प्राप्त हो रहें हैं उनके मूल्य को समझें और सही तरीके से सही स्थान पर उन अवसर का उपयोग करें।

www.pandit.com

भद्रिका योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	2-6-2025 20:9
समाप्ति तिथि:	2-6-2030 20:9

''भद्रिका'' शब्द का अर्थ है ''कल्याण'' अर्थात ये दशा हर तरह से कल्याणकारी होगा। ''भद्रिका'' योगिनी दशा की पांचवी दशा है,तथा इसके स्वामी ''बुध'' है और इसकी अवधि पांच साल की होती है। बुध का प्रभाव हमेशा शुभ ही होता है इसलिए इस अवधि को भी प्रायः शुभ ही माना गया है। भद्रिका दशा के प्रभाव उसके अंतर्दशा पर भी निर्भर करते है, इसलिए ऐसा जरूरी नहीं है कि ये दशा है, ये दशा हमेशा शुभ प्रभाव ही देगा या फिर हमेशा अशुभ प्रभाव ही देगा। इस दशा की अंतर्दशा को मिलकर देखा जाए तो ये मिश्रित प्रभाव प्रदान करता है। भद्रिका दशा के अंतर्गत आपको सामाजिक क्षेत्र, अपने भविष्य तथा आपके संबंधों हर तरफ से शुभ प्रभाव ही प्राप्त होंगे। आपके बिगड़े कार्य भी बन जायेंगे और आप हर क्षेत्र में अच्छा करेंगे।

इस अवधि के दौरान आपको समाज में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा, प्रभावशाली लोगों से मिलने का मौका मिलेगा। ये नया संपर्क जो आप स्थापित कर रहे है वो आपको आपके करियर की प्रगति में मदद करेगा।

बुध का शासन आपके जीवन में उत्सव और शुभ अवसर ला सकता है। रोजगार के क्षेत्र में आपका बेहतर होगा, आपको एक अच्छी नौकरी मिल सकती है, पदोन्नति मिल सकती है तथा आप एक बेहतर घर में शिफ्ट हो सकते हैं। आप अपने जीवन के प्रमुख मुकाम इस अवधि के दौरान हासिल कर सकते है।

ये समय आपके उच्च ज्ञान अर्जित करने के लिए अनुकूल है, आप उच्च अध्ययन के लिए अपना नामांकन करवाने को इच्छुक हो सकते हैं या अपनी पसंद के किसी विषय पर स्वयं अध्ययन पाठ्यक्रम शुरू कर सकते हैं। इस अवधि में किसी भी प्रकार के कार्य आप शुरू करते है तो आपको उसमे सफलता जरूर मिलेगी। कई बार इस अवधि के दौरान आपका झुकाव अपनी उच्च मानसिक क्षमताओं और ज्ञान को लेकर अनैतिक कार्य की तरफ हो सकता है, लेकिन आपको ये सलाह दी जाती है कि आप इस तरह के कार्यों की तरफ आकर्षित न हो क्योंकि ऐसा करना आपके लिए और आपके भविष्य के लिए समस्या खड़ी कर सकता है।

उपाय

- बुध की स्थिति को मजबूत करने के लिए हाथी दांत, कांटेदार भूसी के फूल, सूखे खजूर, कस्टर्ड सेब, सफेद पेठा और गन्ने से बनी वस्तुओं का उपयोग करके आप हवन कर सकते हैं।

- भ्रामरी महादशा के दौरान चार मुखी रुद्राक्ष पहनने से आपको लाभ हो सकता है।

भद्रिका - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	2-6-2025 20:9
समाप्ति तिथि:	11-2-2026 11:39

भद्रिका योगिनी की पहली अंतरदशा ''भद्रिका अंतर्दशा'' है। इस अंतर्दशा की अवधि लगभग 9 महीने तक चलती है, तथा इसके स्वामी ''बुध'' ग्रह है।

www.pandit.com

प्रायः इस दशा का प्रभाव शुभ माना गया है, और इसके सभी अनुकूल प्रभाव आपके जीवन में देखे जायेंगे।

इस योगिनी की पहली अंतर्दशा आपके जीवन में शुभ समाचार लेकर आयेगा तथा आप जीवन में विभिन्न क्षेत्र में सफलता हासिल करेंगे। आपके रोजगार के क्षेत्र में भी आपको एक अच्छा मुकाम हासिल होगा, आय वृद्धि तथा पदोन्नति जैसे अवसर प्राप्त होने की संभावना है। आप अपने मित्र तथा अपने वरिष्ठ अधिकारियों का विश्वास हासिल करने में सफल होंगे। आपके वेतन में बढ़ोतरी होने से आपके जीवनशैली में भी बदलाव आएगा। आप एक वाहन खरीद सकते है, यदि आपके पास पहले से ही वाहन है तो आप उसको बदल कर एक नया वाहन लेंगे। आपके व्यक्तिगत जीवन में भी साडी अच्छी चीजें होंगी जैसे आपका वैवाहिक जीवन सुखद चलेगा साथ ही आपके प्रियजनों और मित्रों से भी अच्छे संबंध स्थापित होंगे।

इस अवधि के दौरान आपके पहले की सभी बुरी आदतें छूट जायेगी, उस आदत को फिर कभी अपने जीवन में शामिल न करने के लिए आप सक्षम होंगे और आप एक नये तरीके से अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

भद्रिका - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	11-2-2026 11:39
समाप्ति तिथि:	12-12-2026 20:39

भद्रिका योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसके स्वामी "शनि" है तथा इसकी अवधि लगभग 12 महीनों की होती है। शनि की कठोर दृष्टि की वजह से ये अवधि को एक कठिन अवधि के रूप में जाना जाता है। जैसा कि सब जानते है शनि के प्रकोप से कोई नहीं बच पाता, शनि का जीवन में प्रवेश ही चुनौतिओं का संकेत होता है। ये अवधि की इसलिए कठिनाई से भरी हुई मानी जाती है। इस अवधि के दौरान आपको अपने जीवन के हर क्षेत्र में मुश्किलों और कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। आपके व्यक्तिगत जीवन तथा आपके रोजगार दोनों क्षेत्र में संघर्ष बना रहेगा। इस अवधि के दौरान आपके आत्मविश्वास में कमी होगी जिसकी वजह से आपके नौकरी के आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके नाखुश हो सकते है और आपकी नौकरी संकट में आ सकती है।

आपके व्यक्तिगत जीवन में आपके निजी संबंधों पर भी शनि की दृष्टि पड़ने की संभावना है, जिसकी वजह से आपका आपके जीवनसाथी के साथ मतभेद हो सकता है, आपके सगे-संबंधी आपसे नाराज हो सकते है तथा आपके मित्रों को भी आपसे शिकायत हो सकती है। ऐसे में आपको सलाह दी जाती है कि आप अपने मन को शांत रखें और कोई भी फैसला जल्दबाज़ी में न लें। इस अवधि के दौरान आपको अपनी सेहत का भी ख्याल रखने की आवश्यकता है। ये समय आपके स्वास्थ्य के लिए भी ठीक नहीं है। आपकी सेहत ख़राब हो सकती है जिसकी वजह से आपको चिकित्सकीय सलाह लेनी पड़ सकती है और इलाज कराना पड़ सकता है। आपकी स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ और जीवन में चल रही परेशानियों की वजह से आप मानसिक रूप से थकान महसूस करेंगे और ये आपके तनाव का कारण भी बन सकता है। इन सभी परिस्थिति को देखते हुए आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान आप अपना और अपने परिवार का थोड़ा ज्यादा ध्यान रखें और कोई भी कार्य को शांत और ठंडे मन से करें।

उपाय

- शनि की स्थिति को मजबूत करने के लिए कस्तूरी, सेमल के पेड़ की टहनियाँ, बेल के पत्ते या फल, और कैक्टस और गुलाब जैसे कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी के पेड़ लकड़ी या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी उपयोग आप हवन में कर सकते हैं। पिंगला तथा उल्का दशा के दौरान इन उपायों के करने आपको लाभ प्राप्त होगा।

- भद्रिका महादशा के दौरान 4 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

www.pandit.com

भद्रिका - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	12-12-2026 20:39
समाप्ति तिथि:	2-12-2027 23:9

भद्रिका योगिनी की तीसरी अन्तर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इस अंतर्दशा की अवधि लगभग 12 महीने 11 दिनों की है तथा इसके स्वामी "शुक्र" है। शुक्र की कृपा से इसका प्रभाव हमेशा सकारात्मक होता है और इस अवधि को आपके अनुकूल माना जाता है।

इस अवधि के दौरान आपकी दिलचस्पी धार्मिक कार्यों में हो सकती है, आपको पूजा-पाठ, हवन और तीर्थयात्रा करना पसंद होगा। इस अवधि के दौरान आपको पुजारियों से तथा संतों से मिलने का मौका मिल सकता है।

आपका व्यक्तिगत संबंध भी अच्छा होगा। आपका पारिवारिक जीवन खुशियों से भरा हो सकता है। आपके परिवार में ख़ुशी और जश्न के मौके आयेंगे जैसे आपके घर में किसी बच्चें का जन्म हो सकता है, किसी का विवाह हो सकता है या आपके व्यापार की, आपके रोजगार की वृद्धि, आय में वृद्धि इत्यादि। आप सबके साथ मिल कर ये जश्न मनायेंगे।

इस अवधि में आपके अच्छे मित्र बनेंगे और आपके ये मित्र आपके जीवन में अहम भूमिका निभा सकते है। आपको आपके वो पुराने मित्र मिल सकते है जिसके साथ आपका संपर्क खो चूका था। आप उनसे मिलेंगे और उनके साथ एक अच्छा वक्त बितायेंगे। इस अवधि के दौरान आपके साथ सभी अच्छी चीजे होंगी लेकिन आपको उन अवसरों का अच्छे से उपयोग करना होगा। आपको ये सलाह दी जाती है कि आपको मिल रहे इन अवसरों को आप हल्के में न लें और मौके का सही उपयोग करना सीखें।

भद्रिका - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	2-12-2027 23:9
समाप्ति तिथि:	11-1-2029 19:9

भद्रिका योगिनी की चौथी अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इस अवधि का समय लगभग 1 महीने 14 दिनों का होता है तथा इसके स्वामी "राहु" को माना गया है। राहु के प्रभाव की वजह से प्रायः इस अवधि का प्रभाव प्रतिकूल ही होता है। ये तो सभी नाम के लेने से ही समझ सकते है कि राहु अपने साथ दुःख, तनाव और संकट ले कर आता है, तो इस अवधि में आपके ऊपर प्रभाव भी यही होंगे। आपको अपनी चल रही परियोजनाओं में कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है, ऐसी भी संभावना है कि आपका ये परियोजना कार्य ठप भी हो सकता है। कठिन परिस्थिति होने पर भी आपको हार नहीं मानना चाहिए नहीं तो आपसे और ज्यादा गलती होने की संभावना हो सकती है, और आपके द्वारा की गयी ये गलतियां आपके प्रतिष्ठा का नुकसान पहुंचा सकती है। जितना हो सके उतना आप विदेश यात्रा करने से बचें क्योंकि विदेश यात्रा करने से आपको परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यदि आपको किसी कारणवश विदेश यात्रा करना पड़ता है तो इस बात का ध्यान रखें कि आपके पास आपके सारे सरकारी दस्तावेज साथ में हो।

आपके दोस्त और आपके परिवार की वजह से आपको कई जोखिम का सामना करना पड़ सकता है। उनके स्वभाव आपको परेशान कर सकते है या आपके लिए समस्या पैदा कर सकते है। आपके परिवार की वजह से कई बार आपको वो सारे कार्य करने पड़ सकते है जो आप नहीं करना चाहते है।

यदि स्वास्थ्य की बात करें तो इस दृष्टि से भी ये अवधि आपके लिए अच्छी नहीं होगी। आप हर समय ऊर्जाहीन और कमजोर महसूस करेंगे। आपको अपने स्वास्थ्य की नियमित जांच करवानी चाहिए। आपको ये सलाह दी जाती है कि समय चाहे कितना भी खराब हो आपके लिए किन्तु आपको अपने विवेक से काम लेना चाहिए और जल्दबाज़ी में कोई भी फैसला लेने से बचना चाहिए।

www.pandit.com

उपाय

- राहु की स्थिति को मजबूत करने के लिए मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजों का उपयोग करना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हवन में हरी दूर्वा घास का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला संकटा दशा के दौरान उपाय करने से आपको इसके कई लाभ प्राप्त होगा।

- भद्रिका महादशा के दौरान 4 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त होगा।

भद्रिका - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	11-1-2029 19:9
समाप्ति तिथि:	3-3-2029 12:39

भद्रिका योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "मंगला अन्तर्दशा" है। इसका समय 3 महीने 9 दिनों का होता है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चन्द्रमा के शांत और शीतल प्रभाव की वजह इस अवधि का प्रभाव भी आपके अनुकूल होगा। जैसे चन्द्रमा शीतलता प्रदान करता है उसी प्रकार प्रकार चन्द्रमा द्वारा शासित ये अवधि आपके जीवन में राहत प्रदान करेगा। आप भविष्य, आपका परिवार सबका कल्याण होगा और आप इस अवधि में अत्यंत खुश रहेंगे। आपको अपने परिवार और दोस्तों के साथ अच्छा समय व्यतीत करने का मौका मिलेगा। यदि आप अपने परिवार को बढ़ाने की योजना बना रहें हैं तो ये समय आपके संतान सुख की प्राप्ति के लिए अनुकूल है। आपके घर में नये सदस्य के आने के योग इस अवधि में बनते है फिर चाहे वो आपको संतान की प्राप्ति के योग हो या फिर आपके परिवार में किसी और को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपके बच्चें इस अवधि में आपके लिए खुशियों का श्रोत बन सकते है जैसे कि वो अपने विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन कर सकते है या उनको अच्छी नौकरी मिल सकती है।

आपके कार्य क्षेत्र में भी आपको काफी तरक्की मिलेगी। आपको रोजगार के नए अवसर मिलेंगे या आपकी पदोन्नति या आय वृद्धि हो सकती है। आपको व्यापार के क्षेत्र में भी लाभ प्राप्त होगा। आप इस अवधि में नया घर या जमीन खरीदने में सक्षम होंगे। आपको ये सलाह दी जाती है कि आपको जो भी अवसर प्राप्त हो रहें है उन अवसरों का ख़ुशी-ख़ुशी स्वीकार करें और अपने जीवन को खुल कर जीयें।

भद्रिका - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	3-3-2029 12:39
समाप्ति तिथि:	12-6-2029 23:39

भद्रिका योगिनी की छठी अंतर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है । इसकी अवधि 5 महीने और 1 दिन की होती है, तथा इसका स्वामी "सूर्य" को माना गया है। इस समयावधि को चुनौतीपूर्ण अवधि के रूप में माना जाता है।

इस अवधि के दौरान आपको अशुभ और शुभ दोनों प्रकार के परिणाम प्राप्त होंगे। आपके पारिवारिक जीवन में आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपका आपके जीवनसाथी के साथ सुखद संबंध के न होने की संभावना हो सकती है, आपके बीच लगातार झगड़े हो सकते है इसके साथ ही आपका आपके घर के बुजुर्गों के साथ भी मतभेद होने की संभावना है। आपको ये सलाह दी जाती है कि जितना हो सके अपने बड़ों के साथ होने वाले झगड़े को टालने की कोशिश करें। आपको अपने स्वास्थ्य के साथ-साथ अपने घर के बड़े पुरुष सदस्य खास कर अपने पिता के स्वास्थ्य का

www.pandit.com

ध्यान रखने की आवश्यकता है। आपको आर्थिक क्षेत्र में भी नुकसान का सामना करना पड़ सकता है जैसे कि आपको जमीन या संपत्ति का नुकसान हो सकता है या व्यापार में किये गये निवेश से नुकसान हो सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी कार्य के नतीजे पर पहुंचने से पहले आपको हर संभावित विकल्पों पर विचार कर लेना चाहिए, कोई भी फैसला जल्दीबाज़ी में लें।

भद्रिका - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	12-6-2029 23:39
समाप्ति तिथि:	12-11-2029 4:9

भद्रिका योगिनी की सातवीं अंतर्दशा "धान्या अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 6 महीने 19 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" को माना गया है। इस अवधि को आमतौर पर एक सकारात्मक और अनुकूल अवधि के रूप में जाना जाता है। इस अवधि के दौरान आपको उच्च ज्ञान प्राप्त करने में रूचि हो सकती है और इसलिए आप एक औपचारिक पाठ्यक्रम में नामांकन करवा सकते है तथा अपने खली समय में आप नये विषयों की पढाई कर सकते है। यदि आर्थिक क्षेत्र की बात करे तो आर्थिक रूप से यह समय आपके लिए अनुकूल हो सकता है। आपको कार्यक्षेत्र में बेहतर अवसर मिल सकते हैं, मनचाही नौकरी या पदोन्नति या आय वृद्धि के अवसर की प्राप्ति हो सकती है। आपकी इस अवधि में संपत्ति अर्जित करने की भी संभावना है जैसे कि आप नया घर खरीद सकते हैं या जमीन में निवेश कर सकते हैं।

आपके घर परिवार में आपके पास जश्न मनाने के कई मौके हो सकते हैं। आपका आपके संतान के साथ संबंध अच्छे रहेंगे और आपका आपके जीवनसाथी के साथ भी सकारात्मक और सुखद संबंधों होगा और आप अपने वैवाहिक जीवन का पूरा आनंद लेंगे। आपको अपने परिवार के साथ समय व्यतीत करना पसंद है और ये अवधि आपको ये मौका देगा जहाँ आप अपने परिवार के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे। कुल मिलाकर आपका इस अवधि के दौरान समय अच्छा व्यतीत होगा हर तरफ से ख़ुशी और लाभ प्राप्त होगा। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने हर अवसर के उपयोग से न चुकें।

भद्रिका - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	12-11-2029 4:9
समाप्ति तिथि:	2-6-2030 20:9

भद्रिका योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा "भ्रामरी अंतर्दशा" है। इस अवधि का समय लगभग 11 महीने 29 दिनों का होता है तथा इसके स्वामी "मंगल" को माना गया है। इस अवधि में आपको शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के परिणाम देखने को मिलेंगे। आमतौर पर ये मिश्रित अवधि के रूप में जाना जाता है।

ये अवधि आपके लिए थोड़े तनाव और थोड़ी खुशियां ला सकता है। आपका व्यक्तिगत संबंध सभी के साथ क़ाफ़ी बेहतर रहेगा, आप अपने करीबी रिश्तेदार और परिवार के साथ अपने सुखद संबंध का आनंद लेंगे और उनके साथ मिलकर अपनी खुशियों का जश्न मनायेंगे।

इस अवधि के दौरान पारिवारिक जीवन तो सही चलेगा किन्तु आपको अपनी स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए क्योंकि वो आपके लिए एक चिंता का विषय बन सकता है जिसकी वजह से आपकी खुशियों को नज़र लग सकती है। आपको रक्त संबंधी बीमारी हो सकती है इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपनी सेहत का नियमित जांच करवाते रहें। आपको आग या आग से संबंधित चीजों से चोट लगने की संभावना है इसलिए ऐसी चीजों से दूर रहने की कोशिश करें। संपत्ति के मामले में कुछ विवाद आपकी चिंता को बढ़ा सकते हैं। यदि आप किसी के साथ संपत्ति संबंधित कोई लेन-देन करते है तो उन चीजों का दस्तावेज बना कर एक सबूत के तौर पर अपने पास रख लें ताकि कोई समस्या या विवाद के आने पर आप अपने

www.pandit.com

सबूत को दिखा कर ऐसी विवादों से बाहर आ सकें। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान आप संयम बनाये रखें ये अवधि आपके लिए अच्छे और बुरे दोनों तरह के प्रभाव लेकर आती है इसलिए किसी भी परिस्थिति में आप अपना संयम न खोएं।

उल्का योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	2-6-2030 20:9
समाप्ति तिथि:	2-6-2036 20:9

उल्का योगिनी दशा की छठी योगिनी दशा है। इसकी अवधि 6 वर्ष की होती है तथा इसके स्वामी "शनि" को माना गया है। उल्का को एक अशुभ दशा माना गया है। शनि की छाया की वजह से इस अवधि को चुनौतीपूर्ण माना गया है तथा इस दौरान आपका जीवन प्रतिकूल दशा में चलने की संभावना है। चूँकि उल्का योगिनी की दशा के साथ उसकी अन्तर्दशा भी आती है इसलिए ये जरूरी नहीं है कि इस पूरी अवधि में आपका समय ख़राब ही चलेगा इस योगिनी की अंतर्दशा की वजह से उसके कुछ अच्छे और अनुकूल परिणाम भी आपको देखने को मिलेंगे। ये दशा हमेशा अशुभ फल ही दे ऐसा जरुरी नहीं है। इस दशा के स्वामी शनि है तो इस दशा में आपके जीवन के विभिन्न पहलुओं में कुछ न कुछ चुनौती का सामना आपको करना ही पड़ेगा। आपके कार्यक्षेत्र में परेशानी आ सकती है। आपके द्वारा किये गए कार्य में देरी हो सकती है या फिर आपने कोई काम बिल्कुल सही ढंग से किया हो सब सही चल रहा हो किन्तु अंतिम समय में कुछ परिस्थिति ऐसी हो जाये जिसकी वजह आपका कार्य बिगड़ सकता है या परिणाम में देरी हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में आप अपना धैर्य न खोये और न ही जल्दबाज़ी में कोई फैसला लें। शनि के प्रभाव की वजह से आपका आपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ तनावपूर्ण संबंध हो सकता है इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप जितना हो सके गलती करने से बचें। आपके दफ्तर में आपके साथ काम करने वाले सहकर्मी का व्यवहार आपके प्रति बदल सकता है। आपको पहले की तरह सहयोग नहीं भी कर सकते है तो ऐसी परिस्थिति में खुद पर संयम रखें और शांति के साथ उनसे बातचीत करें।

आर्थिक रूप से भी आपको कुछ दिक्कत होने की संभावना है। जहाँ एक तरफ आप धन संचय की योजना बनाने की कोशिश करेंगे वही दूसरी तरफ आपके घर चोरी होने की संभावना हो सकती है।, इसलिए आपको अपने घर में कीमती सामान को सुरक्षित रखना चाहिए।

आपके घर का माहौल उदास हो सकता है जिसका कारण आप और आपके परिवार ही होंगे। आपके बच्चों की तरफ से आपको प्रतिकूल समाचार मिलने की संभावना है जैसे उनके परीक्षा के परिणाम या अनुकूल विद्यालय में नामांकन का न होना इत्यादि। इसके साथ ही आपको अपने और अपने बच्चों तथा माता-पिता की सेहत का भी खास ख्याल रखना चाहिए। आपको अपने रिश्तेदारों के स्वास्थ्य पर भी नज़र रखना चाहिए क्योंकि इस अवधि के दौरान उनकी तरफ से किसी बड़े की मृत्यु की संभावना बन सकती है।

इन तमाम बातों और परिस्थिति को देखते हुए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने मन को शांत रखें, किसी भी कार्य में जल्दबाज़ी न करें और अपना धैर्य बनाये रखें।

उपाय

- उल्का महादशा के दौरान 7 और 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

उल्का - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	2-6-2030 20:9

www.pandit.com

समाप्ति तिथि:	3-6-2031 2:9

उल्का योगिनी की पहली अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 14 महीने तक चलती है। शनि की दशा में शनि की अंतर्दशा होने की वजह से ये समय आपके लिए बहुत कठिन हो सकता है। आपके करियर से लेकर आपके व्यक्तिगत संबंध तक आपको को चुनौती और कई नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपके रोजगार के क्षेत्र में आपका काम ढंग से न चलने की संभावना है जिसकी वजह से आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके खुश नहीं रहेंगे और आपकी नौकरी जाने की संभावना बन सकती है। नौकरी जाने की वजह से आपको आर्थिक तंगी का सामना भी करना पड़ सकता है।

आपके व्यक्तिगत संबंध भी अच्छे और सुचारु ढंग से नहीं चलेंगे। आपका वैवाहिक जीवन भी सुखद रूप से चलने में परेशानी है, आपका और आपके जीवनसाथी के बीच मतभेद होने की सम्भावना है। आपके परिजन भी आपसे किसी भी कारणवश खुश नहीं रहेंगे। सेहत के मामले की बात करें तो उसमे भी आपको कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपनी सेहत को लेकर थोड़ी भी आशंका होती है तो तुरंत आपको डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए। आपको अपने रिश्तेदारों का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इस दौरान आपके रिश्तेदार में मृत्यु की संभावना है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप इस अवधि के दौरान सचेत रहें और अपनी बुद्धि से काम लें।

उपाय

- शनि की स्थिति को मजबूत करने के लिए कस्तूरी, सेमल के पेड़ की टहनियाँ और सामग्री, बेल के पत्ते या फल, और कैक्टस और गुलाब जैसे कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी/खेजड़ी के पेड़ या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी हवन में उपयोग कर सकते हैं। संकटा तथा उल्का दशा के दौरान उपाय करना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	3-6-2031 2:9
समाप्ति तिथि:	2-8-2032 5:9

उल्का योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 16 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना गया है। शनि और शुक्र की मिलीजुली प्रभाव की वजह से इस अन्तर्दशा का प्रभाव भी मिश्रित देखा जाता है।

शुक्र के प्रभाव की वजह से इस अवधि में आपका थोड़ा कल्याण हो सकता है, किन्तु शनि के प्रभाव होने की वजह से सब कुछ एकदम से ठीक नहीं हो जायेगा आपके कार्य में बाधाएं आयेंगी किन्तु आप उसे अपनी मेहनत और दृढ़ता से दूर करने में सक्षम होंगे। आप अपने दृढ मेहनत और विश्वास से अपने लक्ष्य को पाने में सक्षम होंगे। इस अवधि में आपकी मेहनत और लगन ही आपकी सफलता की कुंजी होगी।

इस अवधि के दौरान आपको अच्छी ख़बरें मिलेंगी आपका विदेश यात्रा की संभावना बन सकती है। अपने छुट्टी का समय आप अपने परिवार और मित्रों के साथ बितायेंगे, उनके साथ यात्रा की योजनाएं बनायेंगे। यात्रा करते हुए आप हर जरुरी दस्तावेज अपने साथ रखें और अपनी कीमती सामान को अपने पास संभाल के रखें। ये अवधि आपके लिए शुभ और अशुभ दोनों पहलु को लेकर आती है इसलिए आपको सावधान रहने की जरूरत है।

आपका स्वास्थ्य आपके चिंता का कारण बन सकता है इसलिए डॉक्टर की सलाह का पालन करने का प्रयास करें और स्वस्थ जीवन शैली अपनाएं। इस अवधि के दौरान आपको किसी प्रिय को खोने का डर भी आपको परेशान कर सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी बात को

www.pandit.com

लेकर अधिक न सोचें जो आपके तनाव का कारण बनें और हर परिस्थिति में समझदारी से काम लें।

उल्का - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	2-8-2032 5:9
समाप्ति तिथि:	2-12-2033 5:9

उल्का योगिनी की तीसरी अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 2 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "राहु" है। इस अवधि को नकारात्मक और कठिन माना जाता है क्योंकि इस अंतर्दशा पर राहु का साया है।

माना जाता है कि राहु की मौजूदगी जीवन में अशांति फैलाती है, इसलिए इस अवधि को चुनौती से भरा हुआ माना जाता है। ये समय आपके और आपके परिवार के लिए कठिन हो सकता है। आपका परिवार, आपके जीवनसाथी, आपके बच्चे, गृहस्थ और मित्र सभी कठिन समय से गुजर सकते हैं। जहां वे स्वास्थ्य को लेकर, वित्तीय नुकसान को लेकर, स्कूल में किसी कठिनाई से या रोजगार के क्षेत्र में परेशानी से पीड़ित हो सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में एक दूसरे का साथ देने की कोशिश करें, एक दूसरे का सहारा बनें। इस अवधि में अपने रिश्तेदार और अपने माता-पिता की सेहत का ख्याल रखें। किसी भी परिस्थिति में तनाव से बचें क्योंकि तनाव आपके स्वास्थ्य के साथ-साथ आपके मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। डॉक्टर की सलाह का पालन करने और स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखने का प्रयास करें। इस अवधि के दौरान आप पने किसी प्रियजन को खो सकते हैं। आपके परिवार के लोग कई बार आपके विचारों से सहमत नहीं होंगे। आपके रिश्तेदार आपकी समझ और विचार के खिलाफ काम कर सकते है, जिसकी वजह से आपको अनेक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि जितना हो सके इस समय विवादों से बचें, ये समय थोड़ा कठिन है इसलिए इस समय में थोड़ी सावधानी बरतें।

उपाय

- राहु को मजबूत करने के लिए आपको मुरमुरे, मकोय का पौधा या ठहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग करना चाहिए। केतु की स्थिति को मजबूत करने के लिए ईख से बनी वस्तुएं, नारियल के रेशे से बनी वस्तुएं, सेंधा नमक, सोफ, गिलोय, नींबू का प्रयोग हवन के लिए कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हरी दूर्वा घास या ईख का भी हवन में प्रयोग करना चाहिए। संकटा दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	2-12-2033 5:9
समाप्ति तिथि:	1-2-2034 2:9

उल्का योगिनी की चौथी अंतर्दशा "मंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 5 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चन्द्रमा की

www.pandit.com

प्रभाव की वजह से इस अवधि का प्रभाव भी आपके जीवन में अनुकूल ही होगा।

आपके जीवन में चल रही कठिनाईयों से चंद्रमा आपको आवश्यक राहत दिलाएगा। इस अवधि के दौरान आपको अनेक लाभ प्राप्त होंगे और साथ ही आपको करियर के क्षेत्र में भी अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। आपको अपनी परियोजनाओं में सफल होने के लिए आवश्यक समर्थन मिल सकता है। यदि आप व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते है तो आपको आपके व्यवसाय में निवेश करने के लिए अच्छे निवेशक मिल सकते है। आपकी नौकरी की तलाश भी इस अवधि में आ कर पूरी होगी। आपके निजी संबंध भी अच्छे होंगे इस अवधि के दौरान तथा आपका परिवार आपकी खुशियों का कारण बन सकता है। आप पाने जीवनसाथी और अपने बच्चों के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे साथ ही उनकी तरफ से आपको कुछ अच्छी खबर मिलने की संभावना है।

आप यदि अपनी पढाई बढ़ाना चाहते है तो ये समय आपके पढ़ाई को आगे बढ़ाने के लिए सबसे बेहतर समय है, इस अवधि में आप किसी भी विषय में अपना नामांकन करवा सकते है ये आपके लिए बेहतर परिणाम के अवसर लेकर आयेगा। इस अवधि के दौरान आपकी स्वास्थ्य संबंधी सारी परेशानी से भी राहत मिल सकती है।

उल्का - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	1-2-2034 2:9
समाप्ति तिथि:	2-6-2034 20:9

उल्का योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 5 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना गया है। सूर्य के कठोर स्वभाव का प्रकोप इस अवधि के प्रभाव में भी देखा जा सकता है, आमतौर पर ये अवधि एक प्रतिकूल चरण के रूप में जाना जाता है।

शनि और सूर्य दोनों का मिलाजुला रूप आपके जीवन में कुछ चुनौतियाँ लेकर आता है। आपके कार्यक्षेत्र और आपके परिवार दोनों ही तरफ से आपको परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। ऐसा भो सकता है कि कई चीजें आपके द्वारा बनायी गयी योजना के अनुसार नहीं चले। जिसकी वजह से आपको काम और घर में मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। इस अवधि में आपके माता-पिता का स्वास्थ्य आपके चिंता का विषय बना रह सकता है। इसलिए उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखें और डॉक्टर के द्वारा दी गयी सलाह का पालन करें।

आपको यात्रा करने के अवसर प्राप्त हो सकते है किन्तु यात्रा पर निकलने के दौरान आपको सतर्क रहने की आवश्यकता है। इस अवधि के दौरान यदि आप कार्य की वजह से यात्रा करते है तो वो यात्रा आपकी सफल नहीं होने की भी संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी समस्या भी आपको हो सकती है इसलिए आपको नियमति उपचार करना चाहिए और डॉक्टर के संपर्क में रहना चाहिए।

उपाय

- आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ के फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी तथा आंवला जैसी वस्तु अपने पास रख सकते हैं। इनमें से एक या एक से अधिक वस्तुएं रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इन वस्तुओं से भगवान सूर्य प्रसन्न होंगे। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ-साथ आक का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला पिंगला दशा के दौरान इन उपायों को करना लाभकारी सिद्ध होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

www.pandit.com

उल्का - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	2-6-2034 20:9
समाप्ति तिथि:	2-12-2034 11:9

उल्का योगिनी की छठी अंतर्दशा धन्य है। इसकी अवधि 9 महीने की होती है तथा इसके स्वामी ''बृहस्पति'' है। इस अवधि को एक कठिन अवधि माना गया है और इस अवधि के प्रभाव भी प्रतिकूल होते है। इस अवधि में आपको कई सारी समस्या का सामना करना पड़ सकता है, आपके जीवन में कठिन चुनौतियां आयेंगी। इस अवधि में आपको अपने स्वास्थ्य का बेहद ख्याल रखना चाहिए क्योंकि आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्या हो सकती है। यदि आपकी सेहत से जुड़ी कोई परेशानी तुरंत खत्म नहीं हो रही है तो आपको जल्द से जल्द डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

आपको रोजगार के क्षेत्र में भी कई परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके साथ वाले सहकर्मी आपके विरोध में खड़े हो सकते है, आपके वरिष्ठ आपके कार्य से संतुष्ट नहीं होंगे जिसकी वजह से आपकी नौकरी खतरे में आ सकती है। कोई भी कार्य करते हुए आप अपना धैर्य न खोये, अपना सारा ध्यान अपने कार्य पर केंद्रित करें। जल्दबाज़ी में कोई भी ऐसा कार्य न करें जिससे आपको बाद में पछताना पड़े।

आपको अपने कार्य में बहुत अधिक प्रगति नहीं मिलने की संभावना है जिसकी वजह से आपको निराशा हो सकती है, किन्तु इस वक़्त आपको हौसले के साथ काम लेना चाहिए ताकि आप इस दुर्लभ परिस्थिति का सामना कर सकें। आपके व्यक्तिगत संबंध भी इस अवधि में प्रभावित होंगे। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप जल्दीबाज़ी में फैसला लेने से बचें।

उपाय

- आप बृहस्पति की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए अनाज, नींबू, हल्दी, पीला सरसों और पीपल के पेड़ से बनी छोटी गोलियों का उपयोग कर सकते हैं। आपको अपने साथ रेशम और प्राकृतिक कपास रखना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ पीपल के पेड़ की शाखाओं और पत्तों का भी हवन में उपयोग करना चाहिए। संकट धान्या दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको बहुत लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	2-12-2034 11:9
समाप्ति तिथि:	2-8-2035 23:9

उल्का योगिनी की सातवीं अन्तर्दशा भ्रामरी है। इसकी अवधि 10 महीने की होती है तथा इसके स्वामी ''मंगल'' है। मंगल के प्रभाव की वजह से ये समय थोड़ा कठिन होता है और इसके प्रभाव भी प्रतिकूल होते है। इस अवधि के दौरान आप में आत्मविश्वास की कमी होने की संभावना है इसके साथ ही आपके जीवन में संघर्ष बना रहेगा। इस अवधि के दौरान आपके शत्रु होने की संभावना है, जो आपके जीवन में परेशानी पैदा कर सकते है। जिसकी वजह से आप चिंताग्रस्त हो सकते है। यदि शांत मन से इन समस्याओं से निपटना चाहे तो आप इन समस्याओं से अच्छे तरीके से निपट सकते है।

आपके निजी जीवन में भी संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। आपके परिवार, प्रियजन, मित्र और सहकर्मी, आपके किसी भी संबंध में इस अवधि के दौरान सामंजस्य स्थापित नहीं हो पायेगा। जिसके कारण आप परेशान रहेंगे आपके मन को शांति नहीं मिलेगी। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने सभी रिश्तें को संभाल के रखें और सभी को साथ ले कर चलें। रिश्तों से आये मतभेद को आप शांतिपूर्ण बातचीत से सुलझा सकते है।

www.pandit.com

इसके अलावा आपके स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं भी बनी रहेगी। आपके पुराने चोट या पुरानी बिमारियाँ फिर से ताज़ा हो सकती है, जिसको ठीक करने के लिए आपको एक उचित उपचार और बेहतर इलाज की आवश्यकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि सेहत से संबंधित किसी भी मुद्दे को लेकर लापरवाह न रहें। अपनी सेहत का पूरा ध्यान रखें।

उपाय लाभकारी सिद्ध होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	2-8-2035 23:9
समाप्ति तिथि:	2-6-2036 20:9

उल्का योगिनी की आठवीं अंतर्दशा भद्रिका है। इस अवधि का समय 25 महीने का होता है तथा इसके स्वामी "बुध" को माना गया है। शनि और बुध दोनों की कृपा इस अवधि के दौरान देखी जाती है इसलिए ये अवधि आमतौर पर मिश्रित परिणाम देने के लिए जाना जाता है।

इस अवधि में आपको आर्थिक लाभ तो होगा किन्तु आपको सतर्क रहने की भी आवश्कता है। धन के नये श्रोत आपको मिल सकते है किन्तु आपको अपनी कीमती सामान के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि इस समय आपका कीमती सामान चोरी हो सकता है। यदि आपको किसी एक क्षेत्र में लाभ हासिल हो रहा है तो दूसरे क्षेत्र में आप हानि के शिकार हो सकते है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी मुद्दे पर फैसले को लेने से पहले उसके पक्ष-विपक्ष पर अच्छे से विचार कर लें। जल्दबाज़ी में कोई भी फैसला न लें। आपको आपके परिवार और मित्र की तरफ से शुभ समाचार मिलने की संभावना है, आप उनकी खुशियों का हिस्सा बने। इस अवधि के दौरान आप अपने मनोरंजन के लिए भी कुछ समय निकाल सकते है। आपको ये सलाह दी जाती है की अच्छे और बुरे परिस्थिति चाहे जैसी भी हो आप अपना संयम न खोये और शांत मन से कोई भी कार्य करें।

उपाय

- आप हवन के लिए हाथी के दांत, कांटेदार भूसी के फूल, छुआरे, कस्टर्ड सेब, सफेद पेठा और गन्ने से बनी वस्तुओं का उपयोग कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ चिचड़ी का भी उपयोग आपको करना चाहिए। उल्का भ्रदारिका दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको बहुत लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

www.pandit.com

WWW.PANDIT.COM
WWW.MAHAGURU.COM
WWW.OCCULTMASTER.COM

Pandit Rahul Kaushal is a world-famous Celebrity Astrologer, & Vastu Shastra Consultant. He started Indian Astrology online a decade back. Having intentions of serving mankind with original planetary & vastu remedies, he stepped into the trading of products like precious gemstones, semi-precious gemstones, crystals, Rudrakshas, and other religious articles.

Pandit.com

pandit.com
techy@pandit.com